जुलाई 2026

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

अनंत जन्मों से 'हम' पूर्ण पुरुषोत्तम को ढूँढ रहे थे, तो इस जन्म में वे 'हमारे' ही देह में प्रकट हो गए !
जिन्हें गर्व नहीं, *गारवता* नहीं, स्पृहा नहीं, *पोतापणुं* नहीं। जिन्हें किसी भी प्रकार की भीख नहीं है।

अडालज : PMHT शिविर : ता. 20 से 24 मई 2026

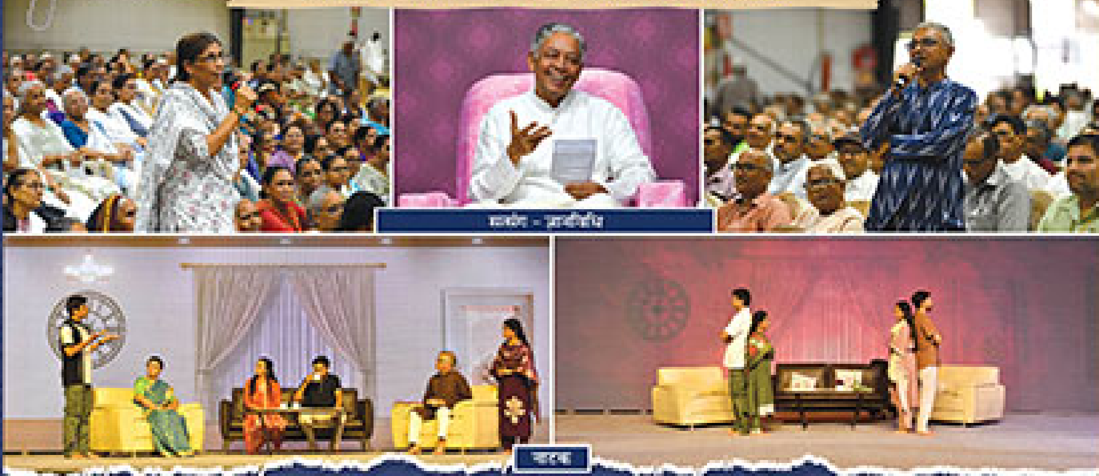

सत्संग - ज्ञानविधि

नाटक

अडालज : हिन्दी शिविर : ता. 3 से 7 जून 2026

सत्संग - ज्ञानविधि

पुस्तक विमोचन

छोटी मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा

दर्शन

गरबा

वर्ष : 21 अंक : 9
अखंड क्रमांक : 249
जुलाई 2026
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2026
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

ऐसे प्योर ज्ञानी पुरुष से भेंट होने पर मुक्ति

संपादकीय

अनंत जन्मों से जीव को मुक्ति (मोक्ष) की झंखना है, उसे प्राप्त करने के लिए अनेक चढ़ाव-उतार के सामने प्रयत्नशील है परंतु इच्छित परिणाम आने से कौन रोकता है? आत्मसाधना करते-करते साधक खुद जिन दोषों से बंधा हुआ है वे दोष अपनी खुद की दृष्टि में नहीं आते, इसलिए निरंतर दोषों को पोषण देकर खुद अपने लिए ही बाधक होकर मोक्षमार्ग से विमुख रहता है। सिर्फ किसी काल में प्रकट हुए ज्ञानी पुरुष जिन्होंने संपूर्ण मोक्षमार्ग को देखा, जाना, अनुभव किया है और उस मार्ग को पूरा किया, इसलिए वे उस मार्ग में आते बाधक दोषों को और उसके ज़ोखिमों को पहचानकर कैसे निर्मूलन कर सकते हैं, वैसा अक्रम विज्ञान दे सकते हैं।

श्रीमद् राजचंद्र ने कहा, 'ज्ञानी पुरुष' कौन, कि जो निशदिन आत्मा के ही उपयोग में रहते हैं। उनका एक ही शब्द सुनने में आए तो जीव मोक्ष में चला जाता है। क्योंकि वे वचनबल सहित हैं। जिन्हें स्पृहा नहीं है, उन्मत्तता नहीं, गर्व नहीं, *गारवता* नहीं, *पोतापणुं* नहीं है! वर्ल्ड में जिसे मान की, कीर्ति की, लक्ष्मी की, विषय की किसी भी प्रकार की भीख नहीं है उन्होंने आत्मा का अनुभव किया है, ऐसा कहा जाता है। ऐसे प्योर ज्ञानी पुरुष की भेंट हो जाए तो मुक्ति होती है।

प्रस्तुत अंक में, साधक को मोक्षमार्ग में उत्पन्न होते बाधक कारण जैसे कि कर्तापने का अहंकार, गर्वरस, *गारवता, पोतापणुं,* जानपने के कैफ के सामने जाग्रत करते हैं। दादाश्री कहते हैं, कि सबसे बड़ा गर्वरस यानी 'मैं जानता हूँ, मैं समझता हूँ', जाना उसे कहते हैं कि देहाध्यास जाए। यह तो देहाध्यास नहीं गया और उसका 'कैफ' रहता है, तो क्या दशा होगी? इस 'ज्ञान' के बाद यदि कभी कैफ चढ़े तो कितनी गलत समझ कहलाती है! यह दोष तो दो पत्तियाँ होते ही उखाड़ देना, वर्ना यह जानपने की मिठास खुद जितनी सीढ़ियाँ चढ़ी हो, वहाँ से गिराता है और मोक्ष भी भूला देता है।

अक्रम मार्ग में उपदेशक होने वालों को ज्ञानी पुरुष लालबत्ती दिखाते हैं कि, पूर्णाहुति करनी हो तो कषायों के क्षय हुए बिना उपदेश में पड़ना वह ज़ोखिम है। जो ज्ञानी पुरुष की अधीनता छुड़वाकर स्वच्छंद में ले जाकर कृपा से मिला हुआ मोक्षमार्ग चुका देता है। आपको तो गुप्तवेश में चले जाना है। पूजे जाने की कामना रहित, अंत तक ज्ञानी पुरुष के अधीन रहकर प्रगति करनी है।

परम पूज्य दादाश्री कहते हैं, पूर्णाहुति करनी है या अधूरा रखना है? पूरा करना है तो कोई कुछ पूछे तो किसी भी जगह पर कमज़ोर मत पड़ना। अभी तो अपने आप पर खुद को पक्षपात है इसलिए मूर्छित करे बगैर नहीं रहेगा। अत: ज्ञानी पुरुष की वाणी का आराधन करने से उत्पन्न होती जागृति से स्वरूप में स्थिर होकर, प्रकृति में उत्पन्न होते बाधक दोषों के सामने सचेत होकर कहीं भी फिसले बगैर ज्ञान की समझ मज़बूत करके, ज्ञानी के आश्रय में सेफसाइड करके मोक्षमार्ग की पूर्णाहुति कर लेने जैसी है।

जय सच्चिदानंद

ऐसे प्योर ज्ञानी पुरुष से भेंट होने पर मुक्ति

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

(सूत्र-1)

अनंत जन्मों से 'हम' पूर्ण पुरुषोत्तम को ढूँढ रहे थे, तो इस जन्म में वे 'हमारे' ही देह में प्रकट हो गए!

प्रश्नकर्ता : कृपालुदेव उसे (अंदर वाले आत्मा को) 'पुराण पुरुष' क्यों कहते हैं?

दादाश्री : मूल पुरुष के बजाय पुराण पुरुष कहते हैं। हम जिन्हें मूल पुरुष कहते हैं न, वे ही पुराण पुरुष हैं।

अनंत जन्मों से 'हम' पूर्ण पुरुषोत्तम को ढूँढ रहे थे, तो इस जन्म में वे 'हमारे' ही देह में प्रकट हो गए! जिन्हें गर्व नहीं, *गारवता* नहीं, स्पृहा नहीं, *पोतापणुं* नहीं। इस देह में *पोतापणुं* नहीं रहता कि मैं कह रहा हूँ और मेरी बात क्यों नहीं सुनते!

प्रश्नकर्ता : खुद एक सेकन्ड के लिए भी पुरुष (आत्मा)हो जाए तो बहुत हो गया।

दादाश्री : एक सेकन्ड के लिए भी कोई पुरुष नहीं हुआ है। आनंदघन जी महाराज ने क्या कहा है? 'हे अजीतनाथ भगवान! आपने तो क्रोध-मान-माया-लोभ और राग-द्वेष को जीत लिया इसलिए पुरुष कहलाए, लेकिन इन कषायों ने मुझे जीत लिया है, मैं पुरुष कैसे कहलाऊँगा?' तो फिर पुरुष कैसे हो सकते हैं! एक सेकन्ड के लिए भी पुरुष हो जाए न, तो परमात्मा हो जाएगा!

भेद विज्ञान से पुरुष और प्रकृति दोनों जुदा हो जाते हैं। आत्मा के जुदा होने के बाद सिर्फ पुरुषार्थ बाकी रहा। जब तक देहाध्यास था, तब तक पुरुषार्थ नहीं खुला था। पुरुषार्थ तो, पुरुष और प्रकृति दोनों के अलग हो जाने के बाद पुरुषार्थ की शुरुआत होती है। पुरुषार्थ करते-करते वह पुरुषोत्तम बनता है! पुरुष में से पुरुषोत्तम बनता है। पुरुषोत्तम योग उत्पन्न होता है। तो पुरुषार्थ क्या करना है? 'मेरे को कुछ अडे नहीं, ये हमारा नहीं है,' 'मेरा नहीं है' ऐसा कहते ही चिपकता नहीं।

पुरुष होने के बाद फिर वह इन आज्ञाओं का पालन करे तो पुरुषोत्तम होकर रहेगा। यह अंतिम दशा है पुरुषोत्तम। पुराण पुरुष पुरुषोत्तम भगवान कहलाते हैं।

(सूत्र-2)

श्रीमद् राजचंद्र ने क्या कहा है, 'ज्ञानी पुरुष' कौन? जिन्हें किचिंत्मात्र किसी भी प्रकार की स्पृहा नहीं है, जिन्हें दुनिया में किसी प्रकार की भीख नहीं है, जिन्हें उपदेश देने की भी भीख नहीं है या शिष्यों की भी भीख नहीं है, किसी को सुधारने की भी भीख नहीं है, किसी भी प्रकार का गर्व नहीं है, *गारवता* नहीं है, *पोतापणुं* नहीं है वे।

कृपालुदेव ने तो क्या कहा है कि सत् पुरुष वही हैं, कि जिन्हें निश दिन आत्मा का उपयोग है। यानी निरंतर कभी भी उपयोग नहीं चूकते, एक सेकन्ड के लिए भी नहीं चूकते, उन्हें सत् पुरुष कहते हैं। फिर, जो शास्त्र में नहीं है, सुनी नहीं है, फिर भी अनुभव में आए, ऐसी जिनकी

वाणी है। जिनकी वाणी नए शास्त्र लिखे जाएँ ऐसी है। उनका एक ही शब्द यदि सुनने में आ जाए तो मोक्ष में चला जाए क्योंकि वह वचनबल सहित है। अंतरंग स्पृहा नहीं, ऐसा जिनका गुप्त आचरण है। बाकी ऐसे तो कई अनंत गुण हैं! वहाँ सत् पुरुष हैं।

कृपालुदेव ने यहाँ तक लिखा है कि,

'संसार केवल अशाता मय (दु:ख-परिणाममय) है। एक अंश *शाता* (सुख-परिणाम) से लेकर उसके पूर्णकामता होने तक की सर्व समाधि का कारण सत् पुरुष ही हैं। इतना सामर्थ्य होने पर भी जिन्हें कोई भी स्पृहा नहीं है, *पोतापणुं* नहीं है, जिन्हें गर्व नहीं है, *गारवता* नहीं है, किसी भी तरह की स्पृहा नहीं है, किसी भी तरह की भीख नहीं है। जिसे वर्ल्ड में मान की, कीर्ति की, लक्ष्मी की, विषय की ज़रा-सी भी भीख नहीं है। वर्ल्ड में कोई भी चीज़ जिसे नहीं चाहिए, उसे भगवान वश नहीं होंगे तो दूसरा कौन वश होगा? ऐसे आश्चर्य की प्रतिमा रूप सत् पुरुष को हम बार-बार नाम रूप से स्मरण करते हैं।'

प्रश्नकर्ता : वह जो 'स्पृहा नहीं है' कहा, तो किस प्रकार की?

दादाश्री : 'ज्ञानी पुरुष' कैसे होते हैं? आपके आत्मा के प्रति स्पृहा वाले होते हैं और बाहर आपका जो भौतिक में है उसके प्रति निस्पृही। भौतिक में कोई भी चीज़ नहीं चाहिए और आपके आत्मा का किस तरह कल्याण हो उतनी ही स्पृहा होती है। हाँ, संपूर्ण निस्पृह नहीं होते। यानी हम 'ज्ञानी पुरुष' निस्पृह-सस्पृह हैं। इसका क्या अर्थ है? यह किनारा भी हमारा नहीं है और वह किनारा भी हमारा नहीं है। हम तेरे *पुद्गल* में निस्पृह हैं और तेरे आत्मा के लिए सस्पृह हैं। तू अगर हमें गालियाँ देगा फिर भी हम तेरे प्रति स्पृहा रखेंगे। उसका क्या कारण है? कि तेरे आत्मा के लिए सस्पृह हैं। वह यदि टेढ़ा करे न, वह अपमान करे न, फिर भी हम उस बेचारे का रक्षण करेंगे! आपकी समझ में आया न?

(सूत्र-3)

अज्ञानी तो कलेक्टर बन जाए तो उन्मत्त हो जाता है। 'ज्ञानी पुरुष' के पास पूरे ब्रह्मांड के साम्राज्य की सत्ता है उसके बावजूद बिल्कुल भी उन्मत्त नहीं हैं।

फिर दूसरा कौन सा गुण?

प्रश्नकर्ता : उन्मत्तता नहीं।

दादाश्री : हाँ। उन्मत्तता यानी क्या? आपको समझ में आता है? मैं आपको आपकी भाषा में बता दूँ।

लोग तो कैसा अहंकार करते हैं? यहाँ से ऐसे जा रहा हो न, तब सीधा स्ट्रेट फॉरवर्ड जा रहा हो, ऐसे साहजिक तरीके से सही चलता है और जब वापस आता है, उस घड़ी हम समझ जाते हैं कि इसमें क्यों बदलाव हो गया लगता है? 'फेस' (चेहरा) बदला हुआ लगता है हमें। लौटते हुए रौब से आता है। तब हम जान जाते हैं कि यह कुछ बदलाव हुआ है, इसे कुछ इफेक्ट हुआ है।

तब हम उसे कहें कि, 'आओ-आओ, ज़रा चाय पीकर जाओ।' हम उसका पता लगाने के लिए चाय पिलाते हैं, उसके रौब के कारण नहीं पिलाते। जबकि वह मानता है कि उसके रौब के कारण चाय पिला रहे हैं। हम चाय पिलाकर फिर पूछें कि, 'किस तरफ गए थे?' तब वह कहता है, 'वे पाँच हज़ार रुपये लेने थे न, वे ले आया।'

जेब में पाँच हज़ार आए, तो वापस यह चढ़ा! उन्मत्त हो जाता है। उसमें रोग घुसा है यह, उन्मत्तता का रोग! यानी कि बैंगन हो गया

फिर से 'टाइट' (कड़क)! वर्ना 'ऐसा' (नरम) हो जाता है बैंगन।

बोलो अब, वे पाँच हज़ार यदि व्यक्ति को टाइट करते हों, व्यक्ति उन्मत्त हो जाता है, तो हमें तो, 'ज्ञानी पुरुष' को तो संपूर्ण भगवान ही वश में हो चुके हैं! बोलो, हमें कितना टाइट होना चाहिए! लेकिन फिर भी उन्मत्तता नहीं है ज़रा भी। यह आश्चर्य ही है न! पाँच हज़ार यदि इतना टाइट करते हों, तो भगवान-पूरे तीन लोक के नाथ, जिनके वश में रहते हैं, वे कितने 'टाइट' होने चाहिए! लेकिन नहीं, वास्तव में लघुता वहीं पर होती है! हम तो छोटे बालक जैसे हैं।

(सूत्र-4)

यह *पोतापणुं* है तब तक ही भेद है और तब तक ही भगवान दूर हैं। *पोतापणुं* छोड़ दिया तो भगवान आपके पास ही हैं।

फिर तीसरा कौन सा वाक्य लिखते हैं?

प्रश्नकर्ता : *पोतापणुं* नहीं है।

दादाश्री : *पोतापणुं* यानी मैं हूँ और यह मेरा है! *पोतापणुं* नहीं है अर्थात् यह शरीर खुद का है ही नहीं। यह शरीर ही मेरा नहीं है इसलिए शरीर से संबंधित कोई भी चीज़ मेरी है ही नहीं। यह मन मेरा नहीं है, यह वाणी मेरी नहीं है। यह जो बोल रहे हैं न, वह भी मेरी वाणी नहीं है। यह ऑरिजिनल टेपरिकॉर्ड बोल रही है। वह वक्ता है, आप श्रोता हो और मैं ज्ञाता-दृष्टा हूँ। यह हम तीनों का व्यवहार हैं। वाणी के हम मालिक नहीं हैं। इस शरीर के हम मालिक नहीं हैं। इस मन के हम मालिक नहीं हैं।

पोतापणुं रहित के क्या लक्षण होते हैं? *पोतापणुं* नहीं है, इसका क्या अर्थ है? सत् पुरुष से ऐसा कहो कि 'आज मुंबई चलिए।' तब वे ऐसा नहीं कहते कि 'नहीं'। लोग उन्हें मुंबई ले जाएँ तो वे पोटली की तरह चले जाते हैं, और पोटली की तरह अहमदाबाद आ जाते हैं। अत: उनमें *पोतापणुं* नहीं है। कोई गाली दें तो भी स्वीकार कर लेते हैं। कोई मारे तो भी स्वीकार कर लेते हैं। अहंकार के पक्ष में बैठना, उसे *पोतापणुं* कहते हैं। अज्ञानता के पक्ष में बैठना, वह *पोतापणुं* कहलाता है। उपयोग चूके, वह *पोतापणुं* कहलाता है। आप कहते हो कि 'अंदर जो कुछ आता है उसमें एकाकार हो जाते हैं, तन्मयाकार हो जाते हैं और बाद में पता चलता है,' वह *पोतापणुं* के कारण एकाकार हो जाते हैं।

यह *पोतापणुं* है तब तक ही भेद है और तब तक ही भगवान दूर हैं। *पोतापणुं* छोड़ दिया तो भगवान आपके पास ही हैं। छोड़ दो न, बिल्कुल आसान है! *पोतापणुं* छोड़ दिया तो आपका सब भगवान ही चला लेंगे। आपको कुछ नहीं करना होता, यदि आप *पोतापणुं* छोड़ दो तो।

(सूत्र-5)

'ज्ञानी पुरुष' में ऐसी दखल नहीं रहती। 'खुद' खिसक जाए तो 'अंत:करण' से 'आत्मा' जुदा ही है। ज्ञानी पुरुष में *पोतापणुं* नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : आप्तसूत्र में वाक्य है कि,

''ज्ञानी का अंत:करण कैसे काम करता होगा? 'खुद' खिसक जाए तो अंत:करण से आत्मा जुदा ही है।'' यह समझाइए।

दादाश्री : एक ओर अंत:करण सांसारिक कार्य करता है और दूसरी ओर आत्मा, आत्मा का कार्य करता है। 'ज्ञानी' में दखलंदाज़ी नहीं होती।

अंत:करण किसे कहते हैं? जिसमें से कर्ता भाव उत्पन्न होता है, 'मैं कुछ कर रहा हूँ,' ऐसा भाव उत्पन्न होता है। 'ज्ञानी' उस अंत:करण से जुदा

होते हैं। यह 'ज्ञान' देने के बाद आपमें 'रियली' कर्ता भाव नहीं रहा लेकिन 'रिलेटिवली' कर्ता भाव है। यानी कि 'डिस्चार्ज' कर्ता भाव रहा है। लेकिन आपकी अभी अंदर थोड़ी दखल रहती है जबकि 'ज्ञानी पुरुष' में ऐसी दखल नहीं रहती। 'खुद' खिसक जाए तो 'अंत:करण' से 'आत्मा' जुदा ही है। इस 'अंत:करण' में 'खुद' रहता है, वह 'खुद' खिसक जाता है।

प्रश्नकर्ता : यह *पोतापणुं* कौन निभाता है?

दादाश्री : वही, मूल था वही का वही। अभी भी वह सीट नहीं छोड़ता। सत्ता खत्म हो गई, लेकिन 'वह' 'सीट' नहीं छोड़ता। तो धीरे-धीरे 'हमें' वह छुड़वा देनी है। 'उसकी' सत्ता चली गई है, इसलिए परेशानी नहीं है। लेकिन यह 'सीट' छोड़ना आसान नहीं है। *पोतापणुं* छूटना आसान नहीं है। *पोतापणुं* आपकी समझ में आया या नहीं आया? जो 'डिस्चार्ज' हो चुका है लेकिन भीतर वहाँ *पोतापणुं* के भाव बरतते रहते हैं। पूरा 'इफेक्ट' ही है। सत्ता चली गई है, सत्ता तो पूरी जा चुकी है लेकिन उसका मूल स्वरूप नहीं जाता है। धीरे-धीरे वह जड़ से चला जाएगा, एकदम से नहीं चला जाता न!

हममें *पोतापणुं* नहीं है। अत: ऐसा ही हो जाएगा, आपमें भी। इस 'ज्ञान' के बाद में 'उसकी' सत्ता चली गई है, अत: कभी न कभी ऐसा हो ही जाएगा। लेकिन यह क्या होता है, वह जानना चाहिए। 'मैं'पन चला गया है, सत्ता चली गई है। सत्ता गई तो समझो चला गया। लेकिन 'खुद' बचा है।

(सूत्र-6)

***पोतापणुं* जाना यानी क्या? हमारी आवाज़ नहीं रहती उसमें।**

मूल अहंकार चला गया, 'चार्ज' अहंकार चला गया। उसी को अहंकार कहा जाता है। लेकिन उस 'डिस्चार्ज' अहंकार जाना कोई लड्डू खाने का खेल नहीं है। अहंकार चला गया तो, उसे क्या कहते हैं? गर्व नहीं, *गारवता* नहीं, *पोतापणुं* नहीं। क्या वह सब नहीं जाना चाहिए? इस 'ज्ञान' के बाद अहंकार तो चला ही गया है, वह चार्ज अहंकार तो चला गया है। फिर बचा कौन सा अहंकार? डिस्चार्ज। जितना अनुभव होता जाएगा, उतना डिस्चार्ज अहंकार कम होता जाएगा और उसके बाद *पोतापणुं* धीरे-धीरे घटेगा। ऐसे ही नहीं घट जाता। यह लड्डू खाने का खेल नहीं है।

कुछ लोग तो ऐसा ही समझते हैं कि 'मुझमें *पोतापणुं* है ही नहीं न! मुझमें मेरापन है ही नहीं न, अब।' जबकि यों तो कषाय में बरतता है। लो! बरतता है कषाय में और कहता है, 'मुझमें *पोतापणुं* रहा नहीं अब।' *पोतापणुं* पर तो जी रहा है वह। वह *पोतापणुं* पर ही जी रहा है। वह *पोतापणुं* तो उनका जाता ही नहीं। *पोतापणुं* जाना तो अति-अति मुश्किल है!

पोतापणुं जाना यानी क्या? हमारी आवाज़ नहीं रहती उसमें। जबकि आप, सभी कहते हैं वैसा ही करते हो या अंदर आपकी आवाज़ अलग रखते हो?

प्रश्नकर्ता : अलग रहती है।

दादाश्री : वही *पोतापणुं* है। जबकि हमारी तो आवाज़ ही नहीं रहती किसी भी प्रकार की। हमें कहें 'दादा, उधर बैठिए।' तो हम वहाँ बैठ जाते हैं। हमें अच्छा नहीं लगे तो भी बैठ जाते हैं।

इसलिए कृपालुदेव ने कहा है न, कि 'ज्ञानी पुरुष' में *पोतापणुं* नहीं होता। कृपालुदेव ने '*पोतापणुं*' शब्द लिखा है, कुछ भारी लिखा है! आपको कैसा लगता है? कृपालुदेव ने यह शब्द अच्छा लिखा है न? अब यह कौन समझाए?

जिस भाषा में कहना चाहते हैं वैसी भाषा कौन समझा सकता है यहाँ पर?

प्रश्नकर्ता : 'ज्ञानी पुरुष' ही समझा सकते हैं न!

दादाश्री : हाँ। क्योंकि और किसी का काम ही नहीं है न! देखो, मैं आपको बता देता हूँ। ऐसे करते-करते हमारा बहुत समय बीत गया। इसलिए आपको तो मैं सीधा रास्ता बता रहा हूँ। मुझे तो रास्ते ढूँढने पड़े थे। आपको तो, मैं जिस रास्ते से गया था, वह रास्ता दिखा देता हूँ, ताला खोलने की चाबी दे देता हूँ।

(सूत्र-7)

'व्यवस्थित' वह *पोतापणुं* छोड़ने के लिए ही मैंने दिया है और एक्ज़ेक्ट है यह। 'व्यवस्थित' यानी 'साइन्टिफिक' चीज़ है। अवलंबन गलत नहीं दिया है, एक्ज़ेक्ट है।

प्रश्नकर्ता : अपने ज्ञान में 'व्यवस्थित' ठीक तरह से समझ में आ जाए तो *पोतापणुं* छूट जाएगा?

दादाश्री : छूट जाएगा न! मैंने 'व्यवस्थित,' *पोतापणुं* छोड़ने के लिए ही दिया है और एक्ज़ेक्ट है यह। 'व्यवस्थित' यानी 'साइन्टिफिक' चीज़ है। वह कहीं आपको यों ही दी हुई चीज़ नहीं है। अवलंबन गलत नहीं दिया है, एक्ज़ेक्ट है।

पोतापणुं छूट जाना आसान बात नहीं है। ऐसी समझ आनी मुश्किल है, उसके लिए ज़्यादा ज़ोर (जागृति का पुरुषार्थ) नहीं करना है। ज़ोर करने जाएगा तो टूट जाएगा।

प्रश्नकर्ता : किन्तु दादा मिले और दादा के सानिध्य में हों, तो हम भाव करें कि हमें छूटना है, तो समझ तो आएगी न? *पोतापणुं* छूट जाए ऐसी समझ तो आएगी न, दादा के पास रहने से?

दादाश्री : समझ आए तो छूट जाएगा।

प्रश्नकर्ता : तो वह समझ किस तरह उत्पन्न होगी?

दादाश्री : कृपा से। सभी के लिए कृपा चाहिए। किन्तु जिसे छोड़ना हो उसे कृपा मिल ही जाती है। छोड़ने की इच्छा, सच्ची भावना होती है, तो छूटने लगता है। उसे क़ीमती पद कहते हैं!

प्रश्नकर्ता : *पोतापणुं* निकाल देने के लिए ज्ञानी पुरुष के पास रहने के अलावा दूसरा कोई असरकारक उपाय नहीं है?

दादाश्री : सारे उपाय ज्ञानी पुरुष के पास रहने से ही हैं। ये (सभी आप्तपुत्र) साथ में रहते हैं इसलिए तो उनकी कमाई है न! सारा दिन यही सुनते रहते हैं न!

प्रश्नकर्ता : गर्व नहीं है, *गारवता* नहीं है। *पोतापणुं* नहीं है, (ऐसे ज्ञानी...)

दादाश्री : तो फिर कैसा आनंद रहता होगा और कैसी मज़ा आती होगी! सारा भार ही *पोतापणुं* का है न! बिना काम के सिर पर बोझा। मी, मी, मी करता रहता है। आम्ही (हम) और तुम्ही (तुम), तुम्ही और आम्ही ऐसे करता रहता है।

हम (दादाश्री) बोलते तो हैं, लेकिन उस बात की पकड़ नहीं होती। 'अभी कितनी देर है' ऐसा पूछते रहते हैं। वे कहे कि 'आप पाँच मिनट बैठीए।' तो फिर हम दो घंटे तक बैठे रहते हैं। पूछते भी रहते हैं और दो घंटे तक बैठे भी रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी भीतर फिर कुछ भी नहीं होता।

दादाश्री : नहीं, वे पाँच मिनट कहे तो भी दो घंटे तक बैठ जाते हैं। फिर से पाँच मिनट कहे तो वापस बैठते हैं।

ज्ञानी के पास रहने का भी मज़ा आता है, ड्रामेटिक होता है न सब! कुछ झमेला नहीं होता न!

प्रश्नकर्ता : ये मनुष्य तो मरने का समय आए तो देखते हैं कि, 'अब दो घंटे रहे या चार घंटे।' किन्तु ज्ञानी तो मृत्यु को सामने रखकर ही चलते हैं न? किसी समय भी मृत्यु आ सकती है।

दादाश्री : ज्ञानी तो संसार की बाबतों में मरे हुए ही होते हैं। वे मृत्यु को सामने नहीं रखते, (संसार में) मरे हुए ही होते हैं। निश्चय में जीवित होते हैं और संसार में मरे हुए होते हैं, उनमें *पोतापणुं* नहीं होता न! जिनमें *पोतापणुं* होता है वे जीवित कहलाते हैं। *पोतापणुं* खत्म होने के बाद *गारवता*-गर्व कुछ भी नहीं रहता है न!

(सूत्र-8)

जिसका उदयकर्म का गर्व गया, उसने आत्मा प्राप्त कर लिया, ऐसा कहा जाएगा।

कृपालुदेव ने ये सब शब्द *पोतापना,* गर्व, *गारवता* ढूँढ निकाले हैं। यह मुझे आश्चर्य लगता है। उन्होंने जो एक-एक शब्द बोले हैं न, वे ढूँढने से भी नहीं मिलते न, ऐसे शब्द! ऐसे शब्द ढूँढने जाएँ तब भी नहीं मिलते।

प्रश्नकर्ता : यह तो अनंत अवतारों का हिसाब ही आया है न?

दादाश्री : हाँ, चलता ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : यानी उन्होंने यह पहले पढ़ा हुआ था?

दादाश्री : यह तो आगे-पीछे का माल निकलता रहता है। यह आज का माल नहीं है। यह गर्व शब्द तो हमें भी समझ में नहीं आया था, पर कृपालुदेव का एक वाक्य पढ़ा। उसमें उन्होंने लिखा,

'धन्य रे दिवस आ अहो, जागी रे शांति अपूर्व रे!
दस वर्षे रे धारा उल्लसी, मट्यो उदयकर्मनो गर्व रे!'

– **श्रीमद राजचंद्र**

गर्व किस बात का था, अभी तक? उदयकर्म का गर्व था। करता है उदयकर्म और मैं कहता हूँ कि 'मैंने किया।' यही उदयकर्म का गर्व है। अब मिट गया, ऐसा कृपालुदेव कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपकी आवाज इतनी मधुर लगी, मेरे रोम-रोम में पूरा रोमांच हो गया।

दादाश्री : हाँ, लगता है न! और रोमांच वाला वाक्य है न! कैसी बात कहते हैं! मुझे उस दिन समझ में आया कि करता है उदयकर्म और 'मैं करता हूँ', ऐसा कहना, उसे ही गर्व कहते हैं। तब मेरा छूट गया। अभी वहाँ अर्थ अलग करते हैं। उसका भान ही नहीं होता न! सभी बड़े-बड़े साधु-आचार्य कहलाते हैं, लेकिन उदयकर्म का गर्व चखते रहते हैं, मस्ती में!

कृपालुदेव ने कैसे एक-एक वाक्य लिखे हैं न! लेकिन गर्व नहीं है इसलिए। यह उदयकर्म त्याग करवाता है और खुद कहता है, 'मैंने किया' उसे गर्व कहते हैं। करवाता है कोई और खुद कहता है, 'मैंने किया', उसे गर्व कहते हैं। पूरा जगत् गर्व कर रहा है। खुद ने नहीं किया, फिर भी कहता है, 'मैंने किया'। ऐसा ज्ञानी पुरुष में नहीं होता। वह आपको पता है न, ऐसा नहीं होता? क्योंकि ज्ञानी पुरुष तो उल्टा 'मैंने किया' यह तो छुड़वाते हैं, आपका भी छुड़वा देते हैं!

(सूत्र-9)

सत् पुरुष *गारवता* में नहीं रहते। वे किसी जगह पर फ्रिज जैसी ठंडक में बैठे नहीं रहते। आप फ्रिज में बिठाओ तब भी बाहर निकल आते हैं और गर्मी में बिठाओ तब भी वे बाहर निकल आते हैं। उनमें ऐसी *गारवता* नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : यह गर्वरस करते हैं वह तो समझ में आता है, ऐसा इस *गारवता* में यह रस कैसे समझ में आए?

दादाश्री : गर्व और *गारवता* दो अलग चीज़ हैं।

प्रश्नकर्ता : इस *गारवता* शब्द को ज़रा और अच्छी तरह समझाइए न।

दादाश्री : आप *गारवता* किसे कहते हो? *गारवता* का अर्थ क्या है? *गारवता,* वह अलग चीज़ है। *गारवता* तो गाय में भी होती है, भैंस में भी होती है और मनुष्य में भी होती है। *गारवता* हर एक मनुष्य में होती है और अपने इन महात्माओं में भी होती है। अभी तक तो लोग निरी *गारवता* में ही पड़े हैं।

अब *गारवता* का अर्थ क्या है? *गारवता* प्रत्यक्ष देखनी हो तो ये मिलें होती हैं न, वहाँ पर गड्ढे होते हैं, तालाब जैसे, बिल्कुल बदबूदार होते हैं, वे। मिल का पानी जाने से वे गड्ढे पानी से भरे रहते हैं। लेकिन पानी मिल का है इसलिए क्षार वाला है न, इसलिए उस क्षार के पानी से गड्ढे के अंदर की मिट्टी नरम पड़ जाती है। उससे अंदर कीचड़ हो जाता है। अंदर की मिट्टी सड़ जाती है, बिगड़ जाती है। वहाँ सड़न हो जाती है। इसलिए ऊपर इतना थोड़ा सा ही पानी होता है लेकिन अंदर बहुत सारा कीचड़ होता है, दो-दो फुट का! और काला, अंधेरे जैसा पानी होता है!

अब भैंसें हैं न, वे गर्मियों में सख्त गर्मी में ठंडक का उपाय ढूँढती हैं, फ्रिज ढूँढती हैं! वे पेड़ ढूँढती हैं, दूसरा कुछ ढूँढती हैं। गायें के मुकाबले भैंसें बहुत गरम होती हैं, इसलिए उनसे ताप सहन नहीं होता। गाय-बकरियाँ सब सहन कर लेते हैं, लेकिन भैंस से सहन नहीं होता। इसलिए फ्रिज (ठंडक) ढूँढती हैं। अत: गर्मियों के दिनों में भैंस खोजती है कि 'कौन सी जगह पर ठंडक है?' लोग नहीं ढूँढते? बहुत गर्मी लगने पर कहेंगे, 'चलो, कोई एयर कंडीशनर रूम में घुस जाएँ।' इसी तरह भैंस को भी पता चलता है। इसलिए जहाँ पानी देखे, वहीं घुस जाती है। और यदि घुसने पर कीचड़ देखे, तो बस वहीं अपना स्थान बना लेती है।

अत: भैंस अंदर कीचड़ में जाकर बैठ जाती है। गड्ढे में पानी होता है, गर्मियों के दिन होते हैं इसलिए पानी का ऊपरी भाग गरम हो जाता है। लेकिन जो कीचड़ है, वह अंदर से ठंडक वाला होता है। भैंस उसमें घुस जाती है, और बैठ जाती है चैन से, यहाँ तक कीचड़ होता है, लेकिन अंदर बैठने से कीचड़ ऊपर आ जाता है। ऊपर आ जाने पर जैसे पूरा कोट पहन लिया हो न, वैसे चारों तरफ कीचड़ फैल जाता है। ऐसा लगता है जैसे पूरा शरीर फ्रिज में रखा हो। ऐसी ठंडक लगती है जैसे फ्रिज में बैठी हो न, वैसा लगता है उसे। कीचड़ यहाँ पूरे शरीर में यहाँ गले तक आ जाता है, और सिर्फ गरदन ही बाहर रखती है और यों देखा करती है बाहर सभी ओर। अंदर बैठ जाती है इसलिए वह जो कीचड़ था न, उस कीचड़ का कवर, वह फ्रिज! क्योंकि कीचड़ की बहुत ठंडक होती है, इसलिए वह एकदम बर्फ जैसा लगता है। उसे ऐसा लगता रहता है जैसे खुद बर्फ में बैठी हो। भैंस इस (कीचड़ के) एयर कंडिशनर में बैठती है और ये लोग मनुष्यों के एयर कंडिशनर में बैठते हैं। उसे ऐसा लगता रहता है कि जैसे वह एयर कंडिशनर में बैठी है।

बोलो अब, फ्रिज में बैठी हुई भैंस, उसे कितना भी सोना दें तो भी वह निकलेगी नहीं। अब मालिक हमेशा तीन बजे दुहता था, दूध निकालता था। उस दिन तो मिली नहीं इसलिए मालिक ढूँढते-ढूँढते वहाँ तक पहुँच गया। गड्ढे में देखा इसलिए मालिक जान गया कि अब तो यह कैसे

निकलेगी? फिर मालिक घास के हरे गट्ठर लाकर आवाज़ देता है। किनारे पर रहकर वह कहता है, 'ले, ले!' भैंस ऐसे कान लगाती है और ऐसे देखती भी है लेकिन फिर मुँह फेर देती है, पर उठती नहीं है। रोज़ हरी घास के लिए भागती थी लेकिन अभी वह ध्यान ही नहीं दे रही। तो अंदर तुझे क्या स्वाद आ गया है? इस फ्रिज की ठंडक! और यहाँ से उठने का नाम भी नहीं लेती। फ्रिज में बैठी हुई है, तो उठेगी? ऐसी गर्मी में एयर कंडिशनर में से निकलेगी क्या? *गारवता* कहलाती है यह। फिर मालिक समझ जाता है कि हरा गट्ठर डाल रहा हूँ फिर भी आकर्षित नहीं हो रही, तो और वह अधिक सुख देने से उठेगी। मालिक समझ जाता है कि अभी उसे मस्ती है, किसी और लालच के बिना निकलेगी नहीं इसलिए फिर बिनौले ले आता है और गुड़ दिखाता है। जो चीज़ें कभी-कभार ही खिलाता है न, वे दिखाता है। तब वह भैंस भी समझ जाती है कि 'हं, वह है। फिर भी इसके जैसा तो है ही नहीं न!' बहुत दिखलाए, ऐसी अच्छी चीज़ें दिखलाए कि जिन्हें देखते ही इच्छा हो जाए, भैंस वह समझ भी जाती है कि गुड़ है। लेकिन *गारवता* में से उठे तब न! अत: उस पर भी ध्यान नहीं देती। किसी भी चीज़ पर ध्यान नहीं देती क्योंकि वहाँ जो सुख मिल रहा है, वैसा किसी और चीज़ में नहीं है इसलिए कीचड़ में से नहीं उठती है। यों देख लेती है, लेकिन बिल्कुल भी हिलती-डुलती नहीं। यों ध्यान ही नहीं देती, बिल्कुल भी ध्यान नहीं देती। कहेगी, 'ऐसा सुख छोड़कर कौन जाए अब?!' वही *गारवता!*

गारवता का सुख इसे कहते हैं। इसी तरह यह दुनिया *गारवता* में ही सुख मान बैठी है, वे *गारवता* में से हिलते ही नहीं न! ये स्त्री-पुरुष उठते ही नहीं हैं न! राम तेरी माया!

भैंस की *गारवता* वह कीचड़ वाली है और मनुष्यों की *गारवता* यह है! भैंस को तो कुछ जगह पर ही *गारवता* होती है लेकिन मनुष्यों को तो स्त्री की *गारवता*, एयर कंडिशनर की *गारवता!* और बेटे का बाप, तो मन में मुस्कुराता रहता है कि, 'तीन बेटे हैं, तो तीन बहुएँ आएँगी। तीन बेटों के लिए तीन मकान बनवाने हैं।' ऐसी सब *गारवता* खड़ी होती है। बदबूदार गड्ढ़े में भैंस बैठी रहती है, उसी तरह पूरी दुनिया *गारवता* में ही पड़ी हुई है। गंध में, निरे विषयों की गंध में! विषय की गंध के लिए कष्ट सहता है। यानी इस दुनिया के लोग रूप *गारवता*, विषय *गारवता*, रस गरवता, मोह की-लोभ की *गारवता* में ही रचे-बसे हैं और इसलिए उन्हें बाहर निकलना अच्छा नहीं लगता।

प्रश्नकर्ता : दादा, हमारे लिए ऐसा कहा जा सकता है कि लक्ष्मी, प्रतिष्ठा, मान-तान, वह जो कुछ मिला है उसमें भैंस जैसे होकर ही बैठे हैं?

दादाश्री : हाँ, भैंस जैसे होकर बैठे हैं।

प्रश्नकर्ता : उस *गारवता* में से निकालने वाला कोई चाहिए न?

दादाश्री : उस *गारवता* में से निकालने वाला चाहिए न! ऐसा कौन लालच दे? ऐसा क्या-क्या रखें कि फिर वह ललचाए? बिनौले और गुड़ की ओर ध्यान नहीं दिया, तो अब किस तरह ध्यान देगी वह? फिर क्या भैंस बाहर निकलेगी? उसे रस *गारवता* कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : इस *गारवता* का स्वाद लेने वाला अंत:करण में कौन होता है?

दादाश्री : लेने वाला कौन होगा भला? वह अहंकार ही और कोई नहीं। बुद्धि समझा देती है कि यह *गारवता* है, बहुत मज़ा आएगा।

प्रश्नकर्ता : उसमें मुख्य रूप से चित्तवृत्ति भी होती है न?

दादाश्री : चित्तवृत्ति तो वहीं के वहीं भटकती है।

प्रश्नकर्ता : *गारवता* के स्थानों में?

दादाश्री : हाँ, वहीं पर घूमती रहती है। जैसे मक्खी भिनभिनाती है, वैसे।

ऐसा है, अभिप्राय से यह मन बना है और मन को बहुत बड़ी चीज़ माना गया है। अब अभिप्राय क्यों खड़ा हुआ? विशेष भाव से अहंकार खड़ा हुआ और अहंकार से अभिप्राय बना। अब अभिप्राय से मन बना, और मन बनने से चित्त की अशुद्धि होने लगी और जैसे-जैसे चित्त की अशुद्धि होती गई वैसे-वैसे कीचड़ में घुसने लगा। संसार के कीचड़ में से अब कौन निकाले उसे?! और फिर *गारवता!* रस *गारवता,* रिद्धि *गारवता* और सिद्धि *गारवता!* तीन प्रकार की *गारवता* में फँसा है, फिर कौन निकाले उसे?

(सूत्र-10)

जहाँ पर बैठे रहने का मन होता है और हिलने का मन नहीं होता, वह सब *गारवता*। कितनी ही सिद्धि *गारवता* होती हैं, कितनी ही रिद्धि *गारवता* होती हैं, कितनी ही रस *गारवता* होती हैं।

प्रश्नकर्ता : इस रस *गारवता* को ज़रा समझाइए न!

दादाश्री : आम का रस, दूसरा रस, यह खीर वगैरह सब।

प्रश्नकर्ता : यानी सारे भोजन के स्वाद?

दादाश्री : हाँ, स्वाद। वह सब रस *गारवता* कहलाती है। किसी व्यक्ति को कुछ चीज़ें बहुत ही भाती है और अगर वह चीज़ उस दिन बननी हो न, तो सुबह से उसका चित्त उसी चीज़ में रहता है और दोपहर को एक बजे बन जाए, तब तक उसका चित्त उसी में रहता है। भोजन के बाद भी और उसके बाद भी उसका चित्त उसी में रहता है, वह रस *गारवता।*

भैंस कीचड़ में पड़ी रहती है, वह रस *गारवता।* इन मनुष्यों की *गारवता* इन पाँच इन्द्रियों के रसों में है। वहाँ से फिर हिलता नहीं है। वह रस *गारवता,* इन्द्रियों की रस *गारवता* कहलाती है।

फिर रिद्धि *गारवता!* 'मेरी दो मिलें हैं और ऐसा है और पाँच बेटे हैं, दो बेटियाँ हैं, बंगला है।' वह रिद्धि *गारवता!* रिद्धि अर्थात् पैसों से संबंधित, यह भौतिक सारी ही रिद्धि कहलाती है और दूसरी सिद्धि कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : सिद्धि में क्या होता है?

दादाश्री : सिद्धि आध्यात्मिक होती है।

प्रश्नकर्ता : सिद्धि का उदाहरण दीजिए न!

दादाश्री : बहुत अहिंसक व्यक्ति होते हैं, वहाँ पर बकरी-बाघ वगैरह इकट्ठे हो जाएँ तब भी कोई परेशानी नहीं होती। या कोई पिटाई करते-करते यहाँ पर आया हो और मुझे देखें कि सबकुछ भूल जाता है। स्वभाव भुला दे!

सिद्धि *गारवता,* इन साधु-संन्यासियों व आचार्यों को होती है। उन्हें कोई कहे, 'बाप जी, मुझे यह दुःख है।' तो वे सिद्धि का उपयोग करते हैं। फिर *गारवता* में रहते हैं। लोग 'बाप जी, बाप जी' कहें तो खुश हो जाते हैं। लोग भी कुछ न कुछ रख जाते हैं, लड्डू वगैरह सब। वे खाते-पीते हैं और मज़े करते हैं। ऐसी सब *गारवता* में रहते हैं। सिद्धि मिले तो सिद्धि की *गारवता* में ही रहा करते हैं, बस। और कुछ 'एडवान्स' होने का विचार ही नहीं करते।

प्रश्नकर्ता : यानी *गारवता* 'एडवान्स' होने से रोक देती है?

दादाश्री : हाँ, उस *गारवता* में, सभी लोग 'बाप जी, बाप जी' करते रहते हैं, तो वे भी खुश-खुश!

कितनी ही सिद्धि *गारवता* होती हैं, कितनी ही रिद्धि *गारवता* होती हैं, कितनी ही रस *गारवता* होती हैं। ऐसी अनेक प्रकार की *गारवता* होती हैं। इन शास्त्रों की भी *गारवता* ही है सिर्फ!

प्रश्नकर्ता : शास्त्रों की भी *गारवता*?

दादाश्री : बस, जहाँ पर बैठे रहने का मन हो और हिलने का मन नहीं हो, वह सब *गारवता।* वर्ना, रोज़-रोज़ प्रगति करनी है।

प्रश्नकर्ता : यानी अंतिम स्टेशन तक पहुँचने से पहले कितने भी ऐसे स्थल आएँ, लेकिन वहाँ रुकना नहीं है!

दादाश्री : वहाँ पर रुक नहीं जाना है। वहाँ पर जो सुख महसूस होगा, उस सुख में रुक नहीं जाना। यों तो, शास्त्र पढ़ने से भी सुख तो बरतता है। क्योंकि 'ज्ञानी पुरुष' की बात है। इसलिए अंदर ठंडक होती है, शांति होती है। राज्य मिल गया हो और राज्य में तन्मयाकार होकर पड़े रहना, वह सारी *गारवता* (संसारी सुख की ठंडक में पड़े रहने की इच्छा) कहलाती है।

बाकी, *गारवता* को लोग समझते ही नहीं, कि *गारवता* क्या है?

प्रश्नकर्ता : यह तो, वह भैंस का उदाहरण दिया न, उससे एकदम स्पष्ट समझ में आ जाता है।

दादाश्री : तो यह उदाहरण दिया न, तो लोग रास्ते में भैंस को कीचड़ में बैठी हुई देखते हैं, गड्ढे में, तो कहते हैं, 'एय वह *गारवता* आई। दादा, देखो *गारवता।*' मैं कहता हूँ, 'हाँ, तुझे याद रह गया!'

गारवता का अर्थ किसी ने किया ही नहीं है। *गारवता* का अर्थ किसी जगह पर पुस्तक में नहीं दिया गया है इसलिए मैंने इस *गारवता* का विस्तारपूर्वक खुलासा किया है।

(सूत्र-11)

दूसरा सुख प्रतीति में बैठ जाए उसकी तो '*गारवता*' छूट जाती है। मन में तय करना चाहिए कि यह हो या वह हो, दोनों को एक समान कर दें न, तो 'सॉल्यूशन' निकलेगा।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यह सुख की भ्रांति, वह पूरा *गारवता* का स्वरूप ही है न?

दादाश्री : सब *गारवता* ही है।

प्रश्नकर्ता : उस *गारवता* के जो संयोग मिलते हैं अभी, यह हिसाब तो वह पहले से ही लेकर आया है न?

दादाश्री : सब 'डिसाइडेड', लेकर ही आया है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी अभी उससे फिर से चिपट पड़ते हैं?

दादाश्री : अज्ञानी हो तो चिपट पड़ेंगे लेकिन यदि 'ज्ञान' और 'आज्ञा' पालन करें तो नहीं चिपटेंगे।

प्रश्नकर्ता : तब भी उसमें से छूट नहीं सकता? उसे भुगतना तो पड़ेगा ही न, उतना?

दादाश्री : हस्ताक्षर किए हुए हैं न!

प्रश्नकर्ता : अभी उस *गारवता* में फिर से स्वाद ले तो नए हस्ताक्षर हो जाएँगे क्या?

दादाश्री : नहीं, अपना 'ज्ञान' लिया हुआ हो तो नहीं होंगे।

प्रश्नकर्ता : इस *गारवता* में, अभी तक की लाइफ में यों चित्तवृत्ति तो ऐसी बिखरी हुई ही रहती है न?

दादाश्री : पूरी बिखरी हुई ही रहती है। इसलिए एकाग्र होता ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : तो यह जो *गारवता* है, उसे प्रमाद की पराकाष्ठा नहीं कह सकते?

दादाश्री : प्रमाद, वह अलग चीज़ है, और यह *गारवता,* वह अलग चीज़ है। *गारवता* अर्थात् उसे उठने का विचार भी नहीं आता। प्रमादी के मन में तो ऐसा होता है कि, 'अरे, मैं प्रमादी हूँ।' जबकि *गारवता* वाले को तो 'मैं *गारवता* में हूँ' ऐसा भान ही नहीं होता! *गारवता* में ही है न, जगत्। अभी तक सब *गारवता* ही कहलाती है। वह भैंस खड़ी ही नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : लेकिन *गारवता* में से छूटने की कोई चाबी होगी न?

दादाश्री : वह तो, अपने आप जब बाहर ठंडा हो जाए तब उठ जाती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इन मनुष्यों की लाइफ में ऐसा कोई वातावरण आता है?

दादाश्री : नहीं, नहीं। अभी ये सभी *गारवता* में हैं। क्या पेडर रोड (मुंबई में) से उठकर वहाँ सांताक्रुज़ जाएँगे? दिवालिया निकल जाए तब जाएँगे। पैसे नहीं हों, कुछ भी नहीं हो। तब फिर कोई धकेलकर निकाले तब जाएगा।

प्रश्नकर्ता : तो फिर यह *गारवता* इन मनुष्यों में से जाएगी कैसे?

दादाश्री : दूसरा सुख देख ले तब जाएगी।

प्रश्नकर्ता : दूसरा कोई अच्छा सुख मिले तो छूट जाएगी?

दादाश्री : हाँ, तब छूट जाएगी। दूसरा सुख प्रतीति में बैठ जाए उसे। कभी देखा नहीं हो और प्रतीति बैठ जाए कि 'ये दादा कहते हैं वैसा ही है' तब वह जाती है।

प्रश्नकर्ता : अपने महात्माओं में यह *गारवता* है न?

दादाश्री : हाँ है, लेकिन *गारवता* को वे समझते हैं कि हमें *गारवता* का भूत है, फिर भी अच्छी लगती है *गारवता!*

प्रश्नकर्ता : इस *गारवता* में न रहें और निकल जाएँ ऐसा कौन सा सॉल्यूशन है?

दादाश्री : 'सॉल्यूशन' तो, मन में तय करना चाहिए कि यह हो या वह हो, दोनों को एक समान कर दें न, तो 'सॉल्यूशन' निकलेगा। समान! खुद की नज़र में समान!

इस *गारवता* की और दूसरी चीज़ें देते हैं न, खाने-पीने का मिल रहा हो वह, कीमत एक सरीखी कर दे तो वह खत्म हो जाती है। इसमें भी कहाँ सुख है और इसमें भी कहाँ सुख है, जो ऐसा सब जानता है, वह उसे खत्म कर देता है।

गारवता को तो लोग समझते ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जिसने 'ज्ञान' लिया है, क्या उसके लिए *गारवता* में से छूटने का इसके अलावा और कोई रास्ता है?

दादाश्री : लेकिन 'चंदूभाई' पर असर रहता है या 'शुद्धात्मा' पर असर रहता है? *गारवता* का असर रहता है तो 'चंदूभाई' कहलाएगा और *गारवता* का असर नहीं रहता तो 'शुद्धात्मा' हो गए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, हम यहाँ आए हैं, दादा के दर्शन करने हैं, दादा के साथ बैठना है, उसमें भी वह जो रुचि रहती है, वह भी *गारवता* ही कहलाएगी न?

दादाश्री : नहीं, वह *गारवता* नहीं है। उसे *गारवता* कैसे कहेंगे?! यह तो मुख्य चीज़ है। यह तो अमृत जैसी बात है। हममें *गारवता* बिल्कुल

भी नहीं है। रस *गारवता* नहीं है, रिद्धि *गारवता* नहीं है, सिद्धि *गारवता* नहीं है! किसी भी प्रकार की *गारवता* नहीं है। पूरा जगत् *गारवता* में ही सड़ता रहता है। 'ज्ञानी' *गारवता* में नहीं रहते।

जब 'ज्ञानी पुरुष' समझाएँ तब *गारवता* समझ में आती है। इसलिए इसका 'एक्ज़ेक्ट' अर्थ समझ लेना है, कृपालुदेव क्या कहना चाहते हैं, वह। जो ठंडक मिल गई है उस ठंडक के साथ तुलना की है। लोग संसार में *गारवता* में जो बैठे हैं, तो कितने ही सत् पुरुष और ज्ञानी बार-बार कहते रहते हैं लेकिन कान हिलाकर वापस फ्रिज में बैठ जाते हैं!

(सूत्र-12)

सब से बड़ा गर्वरस चखता है, 'मैं जानता हूँ, मैं समझता हूँ!' गर्वरस को चखने से ही कैफ (नशा) बढ़ता जाता है।

किसी भी चीज़ का धर्म कब प्राप्त होता है? कि महान पुरुषों के वचनों का आराधन किया जाए और उसमें भी 'मैं कुछ भी नहीं जानता,' ऐसे भाव से किया जाए तो पुण्य बंधता है। 'मैं जानता हूँ' इस भाव से किया जाए तो पाप ही बंधता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन 'मैं जानता हूँ' उस भाव से ही हो रहा था।

दादाश्री : नहीं तो फिर भी, मेरा कहना है कि यह सब विरुद्ध कहलाता है। यह तो लोग सिर्फ मानते हैं कि हम पुण्य कर रहे हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन पाप किस तरह से होता है? पाप तो होता ही नहीं न? उसका ऐसा आशय ही नहीं है। किसी को दु:ख भी नहीं होता।

दादाश्री : दु:ख नहीं देना है। गर्वरस चखना है इसमें। सब से बड़ा गर्वरस चखता है, 'मैं जानता हूँ, मैं समझता हूँ!' उसके बाद जो-जो किया जाता है, उस सारी बात में माल नहीं है। कहने जैसा नहीं है। बहुत नहीं खोलना है। मैं थोड़ा बहुत खोल रहा हूँ, वह बुरा दिखेगा फिर। जहाँ चेहरे पर ऐसा भाव है कि 'मैं जानता हूँ,' वहाँ कभी भी फ्रेश नहीं दिखता। इस गर्वरस को चखने से ही कैफ (नशा) बढ़ता जाता है। जिस समझ का कैफ चढ़े, वह भयंकर अज्ञान है। 'ज्ञान' से कैफ का विलय होता है। तमाम प्रकार के कैफ खत्म होने पर अनंत शक्तियाँ प्रकट होती हैं!

अब, सत् पुरुष को गर्व नहीं होता, इसका अर्थ क्या है? वे खुद कितनी भी शांति दें, फिर भी उन्हें ऐसा गर्व नहीं होता कि 'मैं दे रहा हूँ, मैं यह शांति दे रहा हूँ' ऐसा नहीं रहता। वे ऐसा जानते हैं कि 'मैं तो निमित्त हूँ और उसके घर की (उसकी खुद की) शांति उसके लिए अनावृत कर देता हूँ।' अर्थात् गर्व नहीं होता किसी चीज़ का। क्योंकि अहंकार ही नहीं होता तो गर्व कहाँ से होगा? यहाँ सीधी आत्मतृप्ति हो जाए, ऐसा है। जब तक 'मैं कुछ जानता हूँ', तब तक वह अंदर प्रवेश नहीं करने देता।

(सूत्र-13)

'मैं कुछ जानता हूँ,' वह रोग सभी में रहता है। इस कैफ का अंतराय नहीं होगा तब तो 'ज्ञान' बहुत अच्छी तरह से बढ़ जाएगा, 'फिट' हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : क्या ऐसा कहा जा सकता है कि इस मोक्षमार्ग में सब से बड़ा बाधक कारण है, 'मैं जानता हूँ, मैं समझता हूँ'?

दादाश्री : हाँ, यह आत्मघाती कारण है।

प्रश्नकर्ता : उसे ज़रा अधिक स्पष्ट कीजिए न। वह छूट जाए तो कैसे लक्षण होते हैं? वह दोष बरतता हो तब कैसे लक्षण होते हैं? और उसके सामने किस तरह से जागृति रह सकती है?

दादाश्री : ये छोटे बच्चे बड़ों से घबराते हैं। क्योंकि उनकी अक्ल का ताप उस बच्चे पर पड़ता है, उससे फिर बच्चा घबराता है। तो क्या करना पड़ेगा? बालक जैसा हो जाना पड़ेगा। उनके जैसे ही नासमझ बालक! डीलिंग ही बालक जैसा करना पड़ेगा, तब वे बच्चे खेलेंगे आपके साथ। मेरे साथ सभी, इतना सा डेढ़ साल का बच्चा भी खेलता है, जैसे एक ही उम्र के हों ऐसे खेलता है। ऐसा कोई परिणाम तो आना चाहिए न? इस पर सोचना न, तो एक दिन समझ में आ जाएगा। जान लिया तो पता चल जाएगा लेकिन निष्पक्षपाती भाव होना चाहिए। फिर भी भीतर की अजागृति की वजह से पता न भी चले, तो फिर बाद में कभी पता चलेगा।

सभी उल्टे व्यवहार 'इस' दोष से ही होते हैं। जिन्हें उल्टा कहा जाता है, वे सभी 'इस' दोष की वजह से ही होते हैं। मुख्य रूप से यह दोष कि 'मैं जानता हूँ!' बाकी सभी दोष उसके बाद में। इस दोष में से सब उगा है। *खेंच* (अपनी बात को सही मानकर पकड़े रखना) रहती है, तो वह इस दोष से ही। वर्ना सरलता होती है। जितना हमारे साथ ताल-मेल बैठता है, वैसा ही लोगों से ताल-मेल बैठना चाहिए। मेरे साथ क्यों ताल-मेल बैठ जाता है? जहाँ कुदरती रूप से ताल-मेल बैठ जाए, वह तो सहज चीज़ है। वहाँ आपका क्या पुरुषार्थ है? जहाँ ताल-मेल नहीं होता हो, वहाँ ताल-मेल बैठाना, वही पुरुषार्थ है।

ऐसा रोग सभी में रहता है। 'मैं कुछ जानता हूँ,' इस कैफ का अंतराय नहीं होगा तब तो 'ज्ञान' बहुत अच्छी तरह से बढ़ जाएगा, 'फिट' हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कैफ नहीं लाना हो तो भी कई बार आ जाता है।

दादाश्री : हाँ, वह तो हो जाता है, स्वाभाविक रूप से।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कैफ खत्म किस तरह से होता है?

दादाश्री : उसे उत्पन्न ही नहीं होने देना चाहिए। वर्ना उत्पन्न होने के बाद कैफ बंद नहीं होगा, फिर वह खत्म नहीं होगा। इसलिए उसे उत्पन्न ही नहीं होने देना है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, यह तो सूक्ष्म कैफ की बात है। यों तो कैफ दिखाई नहीं देता।

दादाश्री : वह सारा सूक्ष्म ही होता है, मालिक को भी उसका पता नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : उसे उत्पन्न नहीं होने देना, वह किस तरह से हो सकता है?

दादाश्री : ये कषाय उत्पन्न नहीं होने देने के लिए क्या-क्या करते हैं, उसी तरह, यह उत्पन्न ही नहीं हो ऐसी जागृति रखनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : वह कैफ उत्पन्न नहीं हुआ, उसका पता चलता है क्या खुद को?

दादाश्री : चेहरा सुंदर दिखाई देता है। बहुत सुंदर दिखाई देता है, काला हो फिर भी बहुत सुंदर दिखाई देता है। ये तो सभी बदसूरत दिखाई देते हैं! पता नहीं चले ऐसा होता होगा भला? यह सब्ज़ी ताज़ी है या दो दिन पुरानी है, उसका पता नहीं चलता? उसके जैसी है यह बात! क्या यह कोई सूक्ष्म बात है? यह तो ऊपर से ही पता चल जाता है। सभी में कम या ज़्यादा कैफ होता है। कुछ ही लोग उससे निवृत्त हो जाते हैं, जो समझ चुके हैं वे। जहाँ कैफ होता है वहाँ लावण्य नहीं दिखाई देता। अजागृति से यह सब होता है। जागृति हो तो कुछ भी नहीं

होता। अजागृति से ऐसी गलत चीज़ का उत्पादन हो जाता है, जागृति से नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा दोष उत्पन्न होने लगे, तब कैसी जागृति रखनी चाहिए?

दादाश्री : वह तो, ज़बरदस्त जागृति होगी तो उत्पन्न नहीं होगा। इसे तो जागृति ही नहीं कहेंगे न! जागृति रहेगी तो ऐसा पौधा उगेगा ही नहीं न! यह कैफ का पौधा तो 'ज्ञान' होने के बाद उगा है, यह पौधा बाद में ही उगा है। 'ज्ञान' दिया, उस घड़ी वे सभी पुराने पौधे तो खत्म हो गए, बाद में फिर यह नया पौधा उगा। अब जागृति रहेगी तो वह नहीं उगेगा। यह जो कुछ भी है, वह सारा अजागृति से ही हैं। ढेर सारी अजागृति होती हैं, एकाध-दो गुणों जितनी अजागृति नहीं! कितनी सारी स्थूल अजागृति हो तब यह उत्पन्न होता है। वर्ना उत्पन्न ही नहीं होता न!

(सूत्र-14)

इस 'ज्ञान' के बाद यदि कैफ चढ़ जाए तो कितनी उल्टी समझ कहलाएगी? ज्ञान जानने का कैफ? 'जान लिया' तो उसे कहते हैं कि सभी प्रकार के कैफ उतर जाएँ।

प्रश्नकर्ता : इसमें किस बारे में जागृति रहनी चाहिए?

दादाश्री : सभी बारे में। उगे नहीं ऐसा चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यानी क्या-क्या होना चाहिए उसमें?

दादाश्री : यह उगा क्यों? उगता है वही अजागृति है। जागृति उतनी कम कहलाती है। उगता ही क्यों होगा? कषाय होते हैं उस समय क्यों जागृति आ जाती है! सामने वाला व्यक्ति कषाय कर रहा हो, तब भी जागृत हो जाता है! खुद को कषाय होता है तब भी जागृत! यह तो कषाय से भी अधिक खराब, आत्मघाती तत्व है यह! अपना घात करता है। कहता है, 'जानते हैं लेकिन कुछ हो नहीं पाता,' जानने का फिर कैफ! लेकिन वहाँ पर उसे तो अज्ञानता से हमेशा कैफ ही रहता है। पर यहाँ अब इस 'ज्ञान' के बाद भी कैफ चढ़ जाए तो कितनी उल्टी समझ कहलाएगी! ज्ञान जानने का कैफ? अज्ञानता का कैफ तो रहता है!

प्रश्नकर्ता : दादाजी, कषाय तो संयोग से खड़ा होता है। संयोग आए तब जागृति रह सकती है, वह निरंतर रहे, ऐसी चीज़ नहीं है। जबकि यह जो कैफ है, वह निरंतर अंदर पड़ा रहता है।

दादाश्री : यह तो उगता ही रहता है, पानी भी छिड़कते हैं। पानी भी छिड़कते रहते हैं। रात-दिन की अजागृति! उसी को आत्मघाती कहता हूँ न! 'जान लिया' तो उसे कहते हैं कि सभी प्रकार के कैफ उतर जाएँ।

प्रश्नकर्ता : अभी किसी से दादाजी के 'ज्ञान' के बारे में बात करते हैं, तो पहले मन में ऐसा रहता है कि 'मैं जानता हूँ।'

दादाश्री : हाँ, बस वही यह रोग है न!

प्रश्नकर्ता : तो बात किस तरह करें, दादाजी?

दादाश्री : लेकिन वह बात तो, उसमें बरकत ही नहीं आती, कुछ मेल ही नहीं खाता न! सामने वाले को 'फिट' ही कैसे होगा? 'मैं जानता हूँ' वह बहुत बड़ा रोग है!

इसलिए हम कहते हैं न, सामने वाले के साथ हम पहले 'यह' आयोजन करते हैं। हममें ऐसा रोग नहीं है, इसलिए आयोजन हो जाता है। हममें यह रोग बिल्कुल भी नहीं है। ऐसे कोई

रोग हममें नहीं हैं। हमारे साथ बैठने से सभी रोग चले जाते हैं। पूछ-पूछकर कर लेना। यों ही बैठे रहोगे, तो वह भी काम का नहीं है। वर्ना यों ही तो 'ट्यूब लाइट' भी बैठी रहती है न मेरे साथ! नहीं बैठी रहती?

किसी के साथ झंझट हो जाए तो 'मैं जानता हूँ' वह उसके मन में, *लक्ष* में होता है और बातचीत करने जाता है, तो केस पूरा बिगड़ जाता है। लेवल नहीं मिल पाता न! लेवल आता ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : दादाजी, जागृति ऐसी रहनी चाहिए न कि ज़रा सा भी गलत विचार आए कि तुरंत, उसी सेकन्ड पकड़ में आ जाए।

दादाश्री : हाँ, वह पकड़ में आ जाए तो बहुत हो गया। उगते ही पकड़ में आना चाहिए। इसलिए हम कहते हैं कि, निराई कर देना, उगते ही। दूसरा भाग दिखे कि निराई कर देना। लेकिन जागृति के बिना ऐसा कैसे हो सकता है? और बहुत बड़ी जागृति की ज़रूरत है। हम ऐसी आशा भी कैसे रख सकते हैं? इतनी ज़्यादा आशा नहीं रख सकते न!

इसलिए उपाय करना चाहिए। कोई आकर कहे, 'आपका ज्ञान बहुत ऊँचा है।' उस घड़ी समझ जाना कि यहाँ रोग हो जाएगा अभी। रोग होने का प्रत्यक्ष कारण! हमें वहाँ सावधान हो जाना चाहिए।

पहले कभी इसमें मिठास बरती थी? जिस दिन मिठास बरते, उस दिन वह उगता है और फिर से मिठास बरते तो इतनी बड़ी कोंपलें निकलती हैं। जैसे आम की कोंपल निकलती है न! दो पत्तियों से इतनी बड़ी, दूसरी दो पत्तियाँ उगें तो इतना बड़ा हो जाता है, इस तरह बढ़ता जाता है। आप मिठास का पानी पी गए कि बढ़ गया। 'क्या चंदूभाई, आप तो ओहोहो, ज्ञानी ही हो गए!' तो यह सुनकर अगर मिठास आई, कि उगा अंदर!

अब ऐसा हो जाए न, तो वहाँ पर दूसरा उपाय करना, तुरंत मिटा देना चाहिए। अपने यहाँ उपाय है। रोग तो स्वाभाविक तौर पर उत्पन्न हो जाता है। जो बीज पड़ा है, उसका रोग तो उत्पन्न हो जाता है। लेकिन उपाय है अपने यहाँ। अपने यहाँ यह 'विज्ञान' उपाय रहित नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : नहीं, यहाँ के एक-एक वाक्य सभी रोगों को खत्म कर दें ऐसे हैं।

दादाश्री : हाँ, उपाय है अपने यहाँ। इसका मूल इसमें से उगता है कि 'बहुत अच्छा हो गया है'। उसकी मिठास बरती कि फूटा! और यह चीज़ मीठी है न? मोक्ष की तरफ का भुला दे, ऐसी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह जोखिम है, ज़बरदस्त जोखिम है, मोक्षमार्ग के लिए।

दादाश्री : जोखिम, आत्मघाती! कोई ऐसा कहे तब कहना, 'भाई, मेरी बात तो मैं ही जानता हूँ, आपको क्या पता चलेगा?' तब फिर वह ठंडा हो जाएगा। हमें क्या गुरु बन बैठना है?

प्रश्नकर्ता : दादा, छूटने जैसा है इसमें से।

दादाश्री : बहुत बड़ा फँसाव! और फिर भी वैसा उदय आए तो लोगों की हेल्प करनी चाहिए, वह तो अपना काम है। लेकिन उदय में आया हुआ होना चाहिए। गुरु बन बैठने में फायदा नहीं है, उदय में आया हुआ होना चाहिए। उदय अपने आप ही आता है। जो सीट चाहिए ही नहीं, उस सीट पर ही बैठना पड़े, तो बात अलग है। यानी उसके लिए आकांक्षा नहीं रखनी है।

खुद के पेपर में खुद ही मार्क्स दे, तो कोई फेल होगा?

प्रश्नकर्ता : कोई नहीं होगा।

दादाश्री : खुद पेपर की जाँच करे, खुद ही मार्क्स दे और खुद ही फेल हो जाए, तब मैं जानूँगा कि 'जजमेन्ट' (मूल्यांकन) सही है, लेकिन ऐसा होता नहीं है न?

प्रश्नकर्ता : यह तो वापस खुद बाहर नम्र दिखने की भी मेहनत करता है।

दादाश्री : इसलिए आत्मघात कहता हूँ न! वह आत्मघात लाता है। आपको तो इतना देखना है कि लोगों को आकर्षण होता है? नहीं, आकर्षित नहीं होते। तो बहुत रोग है अभी। आकर्षण यानी शुद्ध ही! शुद्ध होने लगे तो आकर्षित होने लगते हैं।

प्रश्नकर्ता : नहीं दादाजी, लोग तो आकर्षित होते हैं। कुछ समय के लिए तो आकर्षित होते हैं न?

दादाश्री : नहीं, बिल्कुल भी नहीं न! खड़ा ही नहीं रहता न कोई! पहले ही दिन उड़ जाता है बल्ब! एक-दो दिन के लिए निभा लेते हैं लोग, फिर नहीं निभाते। यह तो, 'ज्ञानी पुरुष' हैं, तो हमें दोष का पता चलता है। वर्ना उसे खुद को कैसे पता चलेगा? चला स्टीमर कोचीन की तरफ! क़ुतुबनुमा बिगड़ गया है, इसलिए कोचीन चला! वह क़ुतुबनुमा दक्षिण को ही उत्तर दिखाता है! वर्ना क़ुतुबनुमा हमेशा उत्तर में ही ले जाता है, वह उसका स्वभाव है! क़ुतुबनुमा बिगड़ जाए फिर क्या करें? और खुद को ध्रुव के तारे देखने आते नहीं है!

ये सब भय सिग्नल जानने ही पड़ेंगे न? ऐसे ही कुछ चलता होगा क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, सब से बड़े जोखिम हैं ये तो!

दादाश्री : आत्मघाती तत्व है।

प्रश्नकर्ता : और फिर वह आगे बढ़ने ही नहीं देता, दूसरा नया ज्ञान उत्पन्न होने भी नहीं देता।

दादाश्री : होने ही नहीं देगा न! पूरा आत्मघात कर देता है न! जो है न, उसी को वापस गिराता रहता है।

प्रश्नकर्ता : खूबी यह है कि आपके जो शब्द निकलते हैं, वे एक्ज़ेक्ट 'उसे' अंदर असर करते हैं, वह रोग चला जाता है, दृष्टि बदल देते हैं और अंदर एक्ज़ेक्ट क्रियाकारी होता हुआ दिखाई देता है, बहुत वैज्ञानिक लगता है यह सब!

दादाश्री : बात पूर्ण वैज्ञानिक हो, तभी लोगों का निबेड़ा आता है न, नहीं तो निबेड़ा ही नहीं आता न!

''मारग साचा मिल गया, छूट गया संदेह।''

संदेह छूट गया, सही मार्ग तो मिल गया। रास्ता भूल गए होंगे तो वापस एक मील चलना पड़ेगा और क्या करना पड़ेगा? लेकिन जिसे जाना है उसे मिल जाएगा। 'दादा' से पूछना कि 'हम भटक गए हैं या सही रास्ते पर हैं?' इतना पूछना। 'मेरा ज्ञान कैसा है' ऐसा नहीं पूछना। 'भटक गया हूँ या सही रास्ते पर हूँ?' इतना ही पूछना। दादा कहें, 'ठीक है रास्ता' तो फिर चलते जाना।

(सूत्र-15)

इस 'रेसकोर्स' में किसी का भी (पहला) नंबर नहीं आया है। सिर्फ हाँफ-हाँफकर मर जाते हैं! 'हम' कभी भी इस भागदौड़ में नहीं उतरते। 'हम' तो इतना ही कहते हैं कि, 'भाई, हम में बरकत नहीं है।'

प्रश्नकर्ता : हर एक की ऐसी इच्छा होती है न कि 'मैं कुछ बनूँ' और यहाँ आपके पास ऐसी इच्छा होती है कि 'मैं कुछ भी नहीं बनूँ, विशेषता बिल्कुल भी नहीं चाहिए।' वहाँ व्यवहार

में ऐसा रहता है कि 'मैं कुछ हूँ और मुझे कुछ बनना है'।

दादाश्री : क्योंकि वहाँ 'रेसकोर्स' (स्पर्धा) में पड़ जाते हैं न! इतने सारे घोड़े दौड़ते हैं, उनके साथ वह भी दौड़ता है। अरे, तू बीमार है, बैठा रह न चुपचाप! जबकि वे तो 'स्ट्रोंग' (मज़बूत) घोड़े हैं। और उसमें भी इन सब घोड़ों में पहले नंबर वाले को ही इनाम मिलेगा और बाकी सब तो हाँफ-हाँफकर मर जाएँगे।

अत: इस स्पर्धा में तो कोई मूर्ख भी नहीं पड़े। हाँ, दो सौ-पाँच सौ घोड़ों को इनाम दे रहे हों तो आपका भी नंबर लग जाएगा ऐसा मान सकते हैं। लेकिन अरे, पहला नंबर तो आने वाला नहीं है। तो किसलिए बेकार ही इस रेसकोर्स में पड़ा है? सो जा न, घर जाकर! इस 'रेसकोर्स' में कौन उतरे? इनके रेसकोर्स में कहाँ उतरें? कोई घोड़ा कितना ज़ोरदार होता है! कोई चने खाता है, कोई घास खाता है!

मैं तो इस संसार के रेसकोर्स में पड़ा ही नहीं, इसलिए मुझे ये 'भगवान' मिल गए!

और इनाम तो पहले नंबर वाले को ही! बाकी सब तो भटक मरते हैं। हाँफ-हाँफकर मर जाएँ, तब भी कुछ नहीं मिलता। क्या ऐसे न्याय वाले जगत् में रेसकोर्स में पड़ना चाहिए? आपको कैसा लगता है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : और मनुष्यों का स्वभाव स्पर्धा वाला ही होता है। लोगों में स्पर्धा रहती है न?

प्रश्नकर्ता : रहती है न! वे तो उत्तेजित करते हैं।

दादाश्री : हर एक क्षेत्र में स्पर्धा रहती ही है। अरे, घर में भी यदि तीसरा व्यक्ति आया हो और वह दलीलबाजी करे ऐसा हो, तो पति-पत्नी में भी स्पर्धा चलती है फिर। पत्नी ऐसा बोले, तब ये भाई कहेंगे, 'बैठ, तू तो ऐसा करती है! लेकिन मैं तो ऐसा कर डालूँ, वैसा हूँ।' अरे, दोनों घोड़े दौड़े! कौन इनाम देगा तुम्हें? इसलिए हम तो कह देते थे कि 'हीरा बा को जैसा आता है, वैसा हमें नहीं आता।' यानी कि हम दौड़ने देते थे। 'खूब दौड़ो, दौड़ो, दौड़ो!' फिर हीरा बा भी कहते थे कि, 'आप भोले हैं।' मैंने कहा, 'हाँ, ठीक है।'

ये लोग स्पर्धा करते हैं न, इसलिए दु:ख आते हैं। ये तो रेसकोर्स में उतरते हैं। यह जो रेसकोर्स चल रहा है उसे देखता रह, कि कौन सा घोड़ा पहले नंबर पर आता है! उसे देखता रहे तो देखने वाले को कोई दु:ख नहीं होता। जो रेसकोर्स में उतरते हैं उन्हें दु:ख होता है। इसलिए 'रेसकोर्स' में उतरने जैसा नहीं है।

अभी तक तो गुरुतम होने का प्रयत्न किया था न? हाँ, मैं इनसे बड़ा हो जाऊँ, मैं इनसे बड़ा हो जाऊँ! देखो न, रेसकोर्स चला है। उसमें इनाम किसे? सिर्फ पहले घोड़े को ही और बाकी सभी को? दौड़ते हैं उतना ही। उतना ही दौड़ते हैं, फिर भी उन्हें इनाम नहीं।

प्रश्नकर्ता : दादा, लघुतम पद में रेसकोर्स है क्या?

दादाश्री : नहीं, रेसकोर्स नहीं है। लघुतम आया, वहाँ पर रेसकोर्स नहीं होता। रेसकोर्स तो गुरुतम में होता है सारा। अत: मेरा तो लघुतम पद है और बुद्धि नहीं है, इसलिए मुझे किसी से लेना भी नहीं है और देना भी नहीं है! बुद्धि का छींटा ही नहीं है न!

(सूत्र-16)

अनंत जन्मों तक 'इस' 'रेसकोर्स' में

दौड़ता रहेगा फिर भी अंत में तू ठगा जाएगा, ऐसा है यह जगत्! सब बेकार जाएगा! बल्कि बहुत मार खानी पड़ेगी! इसके बजाय भागो यहाँ से, अपनी 'असली जगह' ढूँढ निकालो, जो अपना 'मूल स्वरूप' है!

प्रश्नकर्ता : इस लघुतम का अर्थ कैसे निकाला? अपना जो अहंकार है, वह अहंकार ज़ीरो डिग्री पर आ जाए वह लघुतम है?

दादाश्री : नहीं, अहंकार तो वैसे का वैसा ही है। लेकिन अहंकार की मान्यता ऐसी हो जाती है कि, मैं सभी से छोटा हूँ और वह भी एक प्रकार का अहंकार ही है। ऐसा है, इस लघु का अर्थ 'छोटा हूँ' हुआ। फिर लघुतर अर्थात् छोटे से भी मैं छोटा हूँ और लघुतम अर्थात् सभी मुझसे बड़े हैं, ऐसा अहंकार। यानी वह भी एक प्रकार का अहंकार है!

अब जो गुरुतम अहंकार है, यानी कि बड़े होने की भावनाएँ, 'मैं इन सभी से बड़ा हूँ', ऐसी मान्यताएँ हैं, उनसे यह संसार खड़ा हो गया है। जबकि लघुतम अहंकार से मोक्ष की तरफ जा सकते हैं। लघुतम अहंकार अर्थात् 'मैं तो इन सभी से छोटा हूँ' ऐसा करके सारा व्यवहार चलाना। उससे मोक्ष की तरफ चला जाता है। यदि लघुतम का अहंकार हो न, तो वह लघु होते-होते एकदम लघुतम हो जाता है। तब वह परमात्मा हो जाता है!

'मैं बड़ा हूँ' ऐसा मानता है, इसलिए यह संसार रेसकोर्स (स्पर्धा) में उतरता है और वे सभी भान भूलकर उल्टे रास्ते पर जा रहे हैं। यानी ऐसा सब (अहंकार का) तूफान! कहाँ इस तरह दड़ (मिट्टी) डालें और ये सारे आम के पेड़ उगाएँ, उन्हें कब खाएँगे और कौन खाएगा, उसका क्या ठिकाना? ये तैयार आम खाओ न चुपचाप! हाँ, जिसे बाग लगाने हों, बाग का मालिक होना हो, वह भले ही लगाए। हमें तो इसका मालिक नहीं होना हैं। हमें इसका गर्वरस नहीं चाहिए। गर्वरस वाले बहुत हैं, वे अपनी तरह से बाग लगाएँगे और उनमें आम आएँगे उनकी देखभाल करेंगे। ऐसे बहुत लोग हैं। यहाँ क्या कमी है? सभी तरह के लोग हैं!

मुझे ऐसा सब नहीं चाहिए था, मुझे तो भगवान ही चाहिए थे। इन आम-वाम की मुझे कुछ नहीं पड़ी थी। फिर भी यह ममता छोड़नी नहीं है। ममता रखनी है, लेकिन कैसी? मालिकी रहित ममता। ओनरशिप नहीं, टाइटल नहीं।

(सूत्र-17)

आपको पसंद हो वैसा कहे, वह पोइन्ट मैन। आपसे कहे और आप पर असर हो जाए तो समझना कि यह पोइन्ट मैन आया!

यहाँ तो ऐसा है न, पोइन्ट मैन बहुत होते हैं। तो आपको गाड़ी दिल्ली ले जानी हो तो न जाने कौन से गाँव चली जाए! इसलिए अपने पोइन्ट से ही बात करते रहना। यहाँ तो कितने सारे पोइन्ट मैन हैं!

गाड़ी 'मेन लाइन' पर जाती है तो नहीं लुटती। पटरी बदली कि लुट जाती है। लुट जाती है और फिर न जाने कौन से गाँव ले जाए उसका कोई ठिकाना नहीं। इसलिए पोइन्ट मैन पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करना चाहिए। उसके साथ चाय-पानी शुरू करें तो फिर गाड़ी इस तरह पटरी बदल देगी न!

प्रश्नकर्ता : इस मोक्षमार्ग में पोइन्ट मैन किसे कहते हैं?

दादाश्री : आपको पसंद हो वैसा कहे, वह पोइन्ट मैन। आपसे कहे और आप पर असर हो जाए तो समझना कि यह पोइन्ट मैन आया! मनचाहा बोले तो फिर मन भ्रमित हो जाता है।

अर्थात् यह जो पोइन्ट मैन है, वह गाड़ी दूसरी पटरी पर चढ़ा देता है, उतनी ही स्पीड से! फिर भी दूसरी पटरी पर चले जाने पर, उसे पता भी नहीं चलता कि मैं दूसरी पटरी पर हूँ। फिर कोई कहे, 'अरे, यह 'रोंग वे' (गलत रास्ते) पर कहाँ आ गए?' तब कहता है, ''हमारा 'रोंग वे' हो ही नहीं सकता कभी भी!'' ऐसा कहता है।

प्रश्नकर्ता : इसलिए निरंतर ज्ञानी का आसरा रखने को कहा है न?

दादाश्री : और क्या इसीलिए तो कहा है न, नहीं तो बात-बात में पोइन्ट मैन मिल जाएँगे और गाड़ी की पटरी बदल देंगे, एकदम से! तब ये वापस क्या कहते हैं? 'हमारी तो राजधानी एक्सप्रेस है!' अरे, लेकिन पटरी बदल गई! राजधानी, तुझे कौन मना कर रहा है? मेन लाइन पर हो तो राजधानी एक्सप्रेस, पटरी बदल गयी तो कौन से गाँव चली जाएगी? दिल्ली आएगा ही नहीं फिर।

अपनी मेन लाइन बदल नहीं जाए उसका ध्यान रखना है। ये सारी पिछली आदते हैं न! सिर्फ (इतना ही है कि) उन आदतों को नहीं छोड़ा है। आपकी समझ में आना चाहिए कि ये आदतें पहले की हैं।

प्रश्नकर्ता : निश्चय में यदि बलवान हो, स्थिर हो, तो व्यवहार सुंदर हो ही जाएगा न?

दादाश्री : व्यवहार सुंदर होना चाहिए और नहीं हो पाया तो निश्चय कमज़ोर पड़ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : उसका दिशा निर्देष यंत्र क्या होता है? 'उल्टी पटरी, सीधी पटरी' उसका प्रमाण क्या है?

दादाश्री : एक तो अहंकार को मिठास लगती है और उल्टी पटरी पर चढ़ने से मिठास लगती है और 'इमोशनल' (भावुक) होता जाता है। जबकि मेन लाइन पर हो तो निराकुलता रहती ही है। जबकि उसमें तो निराकुलता चली जाती है, चेहरा व्याकुल लगता है, ये सारे विचार, सब व्याकुल लगते हैं। उल्टी पटरी पर चलता है, इसलिए खुद का सुख खो देता है।

प्रश्नकर्ता : वह भूल चली गई, ऐसा कब कहा जा सकता है?

दादाश्री : आप विस्तारपूर्वक समझ जाओगे तो वह भूल चली गई ऐसा कहा जाएगा कि 'किस तरह हुआ? शुरुआत कहाँ से हुई? क्या हुआ और क्यों दूसरी पटरी पर चढ़ गया?' ये सब आधार ढूँढ निकालो तो समझ जाना कि भूल चली गई। शुरुआत से ही कि पहले दिन ''क्या हुआ और किस आधार पर, इसका आधार कहाँ से मिल गया और कहाँ से 'इमोशनल' हुए, कहाँ से निराकुलता गई'' वह पता चलेगा।

प्रश्नकर्ता : यह व्यवहार जो होता है, उसमें तो कोई धारणा (इच्छा) ही नहीं होती कि ऐसे जाना है या ऐसे जाना है। जो भी व्यवहार होता है, उसमें किसी भी प्रकार की पकड़ नहीं होती कि ऐसे जा रहे हैं या ऐसे जा रहे हैं। बाकी, जो निश्चय है, वह विचलित नहीं होता।

दादाश्री : व्यवहार डिग जाए तो निश्चय भी डिग जाता है हमेशा। यह तो आपको लगता है ऐसा सब। बाकी, व्यवहार डिगा कि निश्चय भी डिग जाता है। मन में ऐसा लगता रहता है कि, 'नहीं, निश्चय में कुछ भी डिगा नहीं है।' लेकिन व्यवहार डिगा तभी से समझ लो कि निश्चय डिग ही गया है। यहीं पर सावधान रहने जैसा है!

(सूत्र-18)

इस मोक्षमार्ग में हर कोई खुद का 'लेवल' (कक्षा) निकालकर बैठा है। लेकिन

वह बिल्कुल गलत होता है, उसमें एक अक्षर भी सही नहीं होता। और लेवल मानकर बैठ जाए तो वहीं पर अटक जाएगा व्यक्ति।

हमसे यह जो ज्ञान सुना है न, तो यह ज्ञान ही काम करता रहता है। हम जिस रास्ते पर चले हैं, उस रास्ते का ज्ञान आप सुन रहे हो, वह रास्ता ही आपका काम निकाल देगा। आपको तो कहना है, 'दादा, आपके पीछे-पीछे आना है'। तब फिर हम आपको हमारा रास्ता दिखा देंगे।

मेन लाइन पर आ गए, तब फिर परेशानी नहीं न! गाड़ी दूसरी पटरी पर चली गई थी, ऐसा जान लें न, तब भी हल आएगा। जाने बगैर पड़ा रहे तो मुश्किल है। वह तो ऐसा ही समझता है कि 'अपनी भूल नहीं है।'

प्रश्नकर्ता : फिर ऐसा मानता है?

दादाश्री : हाँ और फिर ऊपर से रक्षण करता है। पर किसी की भी भूल दिखें तो वही अपनी भूल है। उसकी भूल उसे देखनी है। दूसरों को (हमें) उसकी भूल देखने का क्या अधिकार है? यह तो बिना काम के न्यायाधीश होता है! कुछ भूल है या नहीं, ऐसा पक्का नहीं है। तो फिर क्यों कहते हो? यह तो खुद के स्वार्थ से कहते हैं! सामने वाले की भूल है या नहीं, उसका क्या प्रमाण है?

अत: यह विज्ञान ही सारे दोष निकाल देगा, वर्ना अन्य कोई विज्ञान दोष नहीं निकाल सकता। फिर से कहीं ऐसा अवसर नहीं मिलेगा। इसलिए सावधान होकर काम करना अच्छा।

मन में खुद अपने आप लेवल नहीं निकालना है, नहीं तो व्यक्ति अटक जाएगा। खुद अपने आप ही लेवल मत निकालना, दूसरे निकालें, तभी काम का।

प्रश्नकर्ता : मन में वह लेवल किस बारे में?

दादाश्री : यह इसी में, इस मोक्षमार्ग में हर कोई खुद का लेवल निकालकर बैठा है। लेकिन वह बिल्कुल गलत होता है, उसमें एक अक्षर भी सही नहीं होता। और 'लेवल' मानकर बैठ जाए तो वहीं पर अटक जाएगा व्यक्ति। अभी तो, गाड़ी को पटरी पर से उतरने में देर ही नहीं लगेगी। इतनी कमज़ोरियों में इसे पूर्णता पर लाना है, तो सब समझना पड़ेगा। सब से पहले तो कपट ही चला जाना चाहिए।

यह तो जो अपना नहीं है, वहीं पर सारी शक्ति खर्च हो जाती हैं।

प्रश्नकर्ता : और फिर कपट से उसी को वापस ढँकना है!

दादाश्री : हाँ, उसी को ढँकना है। अपना कुछ नहीं, फिर भी उसका पक्ष लेता है। 'अरे, तय किया है कि अपना कुछ नहीं, फिर भी उसका पक्ष लिया?' तब वह कहता है, 'भूल गया।'

प्रश्नकर्ता : वह भूल जाता है या फिर अभी तक पक्ष नहीं छूटा?

दादाश्री : पक्ष नहीं छूटा है। भूल गया तो वह यों ही कहता है, उतने समय के लिए लेकिन पक्ष नहीं छूटता न!

इसलिए सावधान हो जाओ, हर तरह से सावधान हो जाओ, बहुत सावधान रहना है।

प्रश्नकर्ता : वह सही बात है। आज मोक्षमार्ग का ध्येय तय हुआ है, लेकिन जब तक उसके बाधक अथवा अनुमोदक कारणों का स्पष्ट विभाजन नहीं हो जाता तब तक 'इस' पटरी पर गाड़ी स्थिर रहना और पूर्णाहुति होना बहुत-बहुत मुश्किल नज़र आता है!

दादाश्री : अगर कहेंगे कि मुश्किल है तो

फिर काम होगा ही नहीं। इसलिए ऐसा कहना कि आपने यह विज्ञान ऐसा दिया है कि कोई मुश्किल है ही नहीं!

(सूत्र-19)

खुद रिश्वत नहीं लेता तो अंदर वाले तुरंत ही कहे अनुसार मुड़ जाते हैं। लेकिन रिश्वत लेता है तो फिर वे मार खिलाते हैं, हर बात में मार खिलाते हैं। इसलिए ध्येय से पीछे नहीं हटना चाहिए।

ये तो हम सारे भयस्थान बता रहे हैं। भयस्थान नहीं बताएँगे न, तो उल्टा हो जाएगा। ये सभी पुण्यशाली हैं न, बात भी प्रकट हुई है न!

जो ध्येय तुड़वा दें, वे अपने दुश्मन हैं। अपने ध्येय का नुकसान करवाए वह कैसे पुसाएगा? आपका ध्येय अनुसार चलता है क्या कभी? उल्टा नहीं कुछ भी? यह तो सहज हो गया है, नहीं?

प्रश्नकर्ता : अंदर 'हैन्डल' मारते रहना पड़ता है।

दादाश्री : चलाते रहना पड़ता है? लेकिन क्या वे अंदर वाले मान जाते हैं? तुरंत ही?

प्रश्नकर्ता : तुरंत ही।

दादाश्री : तुरंत! देर ही नहीं? यह अच्छा है। जितना वे मान जाएँ, उतना मुक्त होने की निशानी है। उतने ही आप उनसे अलग हैं, वह निशानी है। खुद कोई रिश्वत नहीं लेता। रिश्वत लेगा तो वे बात नहीं मानेंगे। 'खुद' उनसे रिश्वत खाता है तो वे आपकी बात नहीं मानेंगे फिर। 'खुद' स्वाद ले आता है, फिर 'अंदर वाले' नहीं मानते।

यह व्यवहार तो दूसरी ओर ही ले जाता है न! अनादि से जिसकी आराधना की है, वह यही एक मार्ग है न! व्यवहार तो हमेशा ही उस तरफ की आदत वाला होता है न! अतः उस तरफ जाए तो भी आपको अपने ध्येय के अनुसार चलाना है। बैल तो पुराना रास्ता देखे तब उसी रास्ते पर चलते रहते हैं। आपको अब अपने रास्ते पर ध्येय के अनुसार चलना है। इस रास्ते से नहीं, दूसरे रास्ते से जाना है। 'इधर चल' कहना।

अतः खुद रिश्वत नहीं लेता तो अंदर वाले तुरंत ही कहे अनुसार मुड़ जाते हैं। लेकिन रिश्वत लेता है तो फिर वे मार खिलाते हैं, हर बात में मार खिलाते हैं। इसलिए ध्येय से पीछे नहीं हटना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : वह रिश्वत कैसी होती है?

दादाश्री : चख आता है और चखते समय फिर मीठा लगता है न, तो फिर वहाँ पर बैठ जाता है। 'टेस्ट' कर आया इसलिए वापस फिर थोड़ा एकाध-दो बोतल पी आता है।

यह सब चोर नीयत कहलाती है। ध्येय पर जाना है, वह और चोर नीयत, ये दोनों साथ में कैसे रह सकते हैं? नीयत पक्की रखनी चाहिए, कोई भी रिश्वत लिए बगैर। यह तो उसे मस्ती चखने की आदत होती है, इसलिए ऐसे वहाँ बैठकर ज़रा वह मस्ती के आनंद में रहता है।

प्रश्नकर्ता : यानी प्रकृति की मस्ती?

दादाश्री : तो दूसरी कौन सी? उसे उसी की आदत पड़ गई है न! इसलिए 'आप' कहो कि, 'नहीं, हमें तो अब इधर जाना है, मुझे मस्ती नहीं चाहिए। हमारे ध्येय के अनुसार चलना है।' ये प्रकृति की मस्तियाँ तो भूल-भूलैया में ले जाती हैं।

खुद के पास अधिकार किसका है? भाव, कि इतना मुझे कर लेना है। निश्चय अर्थात् खुद के अधिकार का उपयोग करना। और बाकी

बाहर का रोग नहीं घुस जाना चाहिए कि 'चलो, मैं पाँच लोगों को सत्संग सुनाऊँ या ऐसा कुछ,' इसका ध्यान रखना है। नहीं तो फिर दूसरे नई तरह के रोग घुस जाएँगे और गलत रास्ते पर चला जाएगा, तो फिर क्या होगा? कोई बचाने वाला नहीं मिलेगा। अत: आपको मोक्ष में जाना हो तो ये 'बात करने' में मत पड़ना। कुछ पूछे तो कहना कि 'मैं नहीं जानता।'

प्रश्नों का खुलासा नहीं दे सकते, एक अक्षर भी नहीं बोल सकते। सिर्फ सहज रूप से बातचीत कर सकते हैं। वर्ना दूसरों में और अपने में फर्क मत मानना। यह तो विशेषता दिखाने के लिए बोलते हैं और वही सारे कषाय ये सब करवाते हैं न! हमारा एक भी वाक्य विशेषभाव वाला नहीं होता। कुदरती रूप से ही निकलता रहता है क्योंकि हमारी रिकॉर्ड है न! आपकी वाणी रिकॉर्ड हो जाए तो फिर परेशानी नहीं है। रिकॉर्ड हो जाने के बाद हो चुका। अभी रिकॉर्ड नहीं हुई है, नहीं?

कोई दो लोग बात कर रहे हों न, तो अक्लमंदी दिखाने का मन होता है, लेकिन उसे 'ज्ञान' नहीं कहते। यह होड़ करने जैसी चीज़ नहीं है। होड़ नहीं होनी चाहिए। होड़ वाली सारी चीज़ें सांसारिक हैं!

(सूत्र-20)

पूर्णाहुति करनी है या अधूरा रखना है? कच्चा रखना है? पूर्ण करना हो तो किसी भी जगह पर कमज़ोर मत पड़ना।

किसी जगह पर कोई बात करते हो? बातचीत में कहीं भी पड़ना ही मत। क्योंकि लोग तो सुनेंगे, लेकिन खुद की क्या दशा होगी? लोगों को तो कान से सुनकर निकाल देना है लेकिन खुद को भी 'इन्टरेस्ट' आता है उसमें। क्योंकि अभी इगोइज़म (अहंकार) है न, वे सब अंदर लूँ-खाऊँ करते हुए, ताक लगाकर बैठे ही रहते हैं। तो धीरे-धीरे उन्हें खुराक मिल जाती है।

यानी अंदर इगोइज़म का रस नहीं पड़ना चाहिए, बुद्धि का रस नहीं पड़ना चाहिए। उसमें फिर बुद्धि का अभाव हो जाना चाहिए, 'इगोइज़म' का अभाव हो जाना चाहिए और उसका भी अभ्यास होना चाहिए तब काम का! तब तक धीरज रखना अच्छा!

अभी अंदर यह अहंकार वगैरह सब कम हुए बिना क्यों गाते रहते हो? किसी को चार आने का फायदा नहीं होता और बेकार ही गाते रहने का अर्थ ही नहीं है न! उस घड़ी वे शब्द तो सभी को अच्छे लगते हैं। लोग कहते भी हैं कि, 'बहुत अच्छी बात है, बहुत अच्छी बात है।' लेकिन उससे तो खुद का इगोइज़म बढ़ जाता है और उन लोगों को तो कुछ भी काम नहीं आता। सिर्फ इतना ही है कि ऊपर सुगंधी आती है! मुँह में जलेबी गई भी नहीं, बस सुगंधी आई उतना ही!

कच्चा रखना हो तो वह रास्ता सरल है, मिठास भी अच्छी रहेगी लेकिन खुद यदि ज़रा सा भी कमज़ोर पड़ेगा न, तो वह अहंकार वगैरह सब अंदर बैठे हुए हैं ही ताक लगाकर कि कब खुराक मिल जाए! भीतर अहंकार खुराक ढूँढता ही रहता है। वह तो हर एक में अंदर वह अहंकार तो बैठा हुआ है ही। अहंकार चढ़ बैठे न, तो वह फिर सिर्फ दलाली ही नहीं ढूँढता। अभी तो दलाली ढूँढता है, लेकिन बाद में तो पूरी पूँजी और आपको खुद को भी खा जाएगा! वह तो अपने आप अंदर है ही। इसलिए जानते रहना है कि इस अहंकार की हाज़िरी है तब तक और किसी चीज़ में नहीं पड़ना है। जिससे अहंकार को 'स्कोप' (अवसर) मिले, वैसा रास्ता मत देना।

अपने ज्ञान का एक बाल जितना भी कहने

जाए तो लोग टूट पड़ेंगे। लोगों ने ऐसी शांति देखी नहीं है, ऐसा सुना नहीं है, इसलिए टूट पड़ेंगे न! और वह अहंकार अंदर बैठा-बैठा हँसता रहेगा, 'हाँ, चलो, अपनी खुराक मिली!' अनादि से ढूँढ ही रहा है! पूर्णाहुति करनी है या अधूरा रखना है? कच्चा रखना है? पूर्ण करना हो तो किसी भी जगह पर कमज़ोर मत पड़ना। कोई पूछे न, तब भी कमज़ोर मत पड़ना।

(सूत्र-21)

अनादि से ऐसी ही मार खाई है न, लोगों ने! यही की यही मार खाते रहे हैं। ज़रा सा स्वाद मिल गया कि चढ़ ही जाता है ऊपर!

'दादा' का ज्ञान जिसने प्राप्त किया है, उस ज्ञान में से जो माल निकलता है न, उसे सुनकर तो पूरी दुनिया सबकुछ धर देगी। और धर देने पर तो क्या होता है? फँसता है फिर! वे सब कषाय जो उपशम हो चुके थे न, वे फटाफट जागृत हो उठेंगे। आकर्षण वाली वाणी है यह! यह ज्ञान आकर्षक है। इसलिए मौन रहना। यदि पूरा हित चाहते हो तो मौन रहना।

गोशाला जो था न, वह पहले तो महावीर भगवान का शिष्य था, खास, स्पेशल शिष्य। लेकिन अंत में वह विरोधी होकर खड़ा रहा। गोशाला महावीर भगवान के पास बहुत समय तक रहा। फिर उसे ऐसा लगा कि मुझे यह सारा ज्ञान समझ में आ गया, इसलिए भगवान से अलग होकर कहने लगा कि 'मैं तीर्थंकर हूँ, वे तीर्थंकर नहीं हैं।' और कितनी बार तो ऐसा भी कहता था कि, 'वे भी तीर्थंकर हैं और मैं भी तीर्थंकर हूँ।' अब ऐसा रोग घुस गया, तो फिर क्या दशा होगी उसकी?

अब, महावीर भगवान के पास था तब भी वहाँ पर सीधा नहीं रहा तो हमारे पास बैठा हुआ कैसे सीधा रहेगा? यदि कुछ गड़बड़ हो जाए तो क्या दशा होगी? और वह तो चौथे *आरे* की बात थी। यह तो पाँचवाँ *आरा* (कालचक्र के बारह भाग में से एक भाग) है, अनंत जन्म खराब कर देगा। अनादि से ऐसी ही मार खाई हैं न, लोगों ने! यही की यही मार खाते रहे हैं। ज़रा सा स्वाद मिल गया कि, चढ़ ही जाता है ऊपर!

(सूत्र-22)

'ज्ञानी पुरुष' की समझ से समझ मिलानी है, पैरेलल टु पैरेलल। वर्ना 'रेल्वे लाइन' उड़ जाएगी। 'खुद की' समझ तो डालनी ही नहीं है।

आज के जीव लालची बहुत हैं। वे खुद का ही शुरू करते हैं जगह-जगह पर, पूजे जाने के लिए सबकुछ करते हैं। और पूजे जाने की कामना रखने वाले फिर नया धारण नहीं कर सकते, सच्ची बात। हर कहीं पर लोग दुकान लगाकर बैठ गए हैं और पूजे जाने की कामना अंदर भरी रहती है कि किस तरह मुझे 'जय-जय' करे। तो उसे अंदर मन में मीठा लगता है। कोई 'जय-जय' करे तो मीठा लगता है। इतना मज़ा आता है वास्तव में!

उल्टा रास्ता है यह सारा! पूजे जाने की कामना जैसा भयंकर कोई रोग नहीं है। सब से बड़ा रोग हो तो पूजे जाने की कामना! किसे पूजना है? आत्मा तो पूज्य ही है। देह को पूजना रहा ही कहाँ फिर?! लेकिन पूजे जाने की इच्छाएँ-लालच हैं सारा। देह को पुजवाकर क्या हासिल करना है? जिस देह को जला देना है, उसे पुजवाकर क्या हासिल करना है? लेकिन यह लालच ऐसा है कि 'मेरी पूजा करे'। इसलिए ये पूजे जाने की लालसाएँ हैं। नहीं तो मोक्ष कोई मुश्किल नहीं है। ऐसी जो नीयत होती है न, उससे मुश्किल है।

ऐसी इच्छा होना भी भयंकर गुनाह है। ऐसी इच्छा कभी हुई थी? अंदर थोड़ी कुलबुलाहट होती है? यह तो हम सावधान कर रहे हैं। सावधान

नहीं करेंगे तो फिर गिर जाएगा न! अच्छी जगह पर आने के बाद गिर जाए तो फिर बेकार हो जाएगा, 'यूज़लेस' हो जाएगा और चोट भी बहुत लगेगी। नीचे हो और गिर जाए तो बहुत चोट नहीं लगती। बहुत ऊपर तक दौड़कर गिर जाए तो बहुत चोट लगती है। इसलिए जहाँ हो वहीं पर रहना, नीचे मत उतर जाना वापस।

कोई भी स्वतंत्र शब्द मत लाना। यहाँ से ले जाकर उसी शब्द का उपयोग करना, स्वतंत्र नया मत रखना। नया स्टेशन भी मत बनाना। या फिर बनाया है? नींव नहीं डाली न? नहीं बनाया? चेतावनी तो होनी चाहिए न! वर्ना न जाने कहाँ जाकर खड़े रहोगे! अभी तो मार्ग बहुत अलग तरह का है यह। कितनी सारी ऐसी लुभावनी जगहें आती हैं! कभी भी देखी नहीं हो ऐसी लुभावनी जगहें आती हैं! जहाँ बड़े-बड़ों ने धोखा खाया है वहाँ आपकी क्या बिसात? इसलिए 'दादा भगवान' के इस मार्ग पर चलो अच्छी तरह। हे! 'क्लिअर रोड फर्स्ट क्लास'! जोखिम नहीं, कुछ नहीं!

(सूत्र-23)

श्रीमद् राजचंद्र ने क्या कहा है? जिन्हें भगवान वश हो गए हैं, ऐसे ज्ञानी पुरुष में कौन-कौन से गुण नहीं होते? गर्व नहीं होता, *गारवता* नहीं होती, अंतरंग स्पृहा नहीं होती, उन्मत्तता नहीं होती।

अभी तो इस तरह से खुद के प्रति खुद को पक्षपात है, इसलिए मूर्छित किए बिना नहीं रहता। और उसका खुद को पता ही नहीं चलने देता न! 'मैं चंदूभाई हूँ' वह भान तो हमने तोड़ दिया है और दिया हुआ आत्मा भी खुद के पास रहता है। लेकिन जब उदय के उतार-चढ़ाव आते हैं तब पता नहीं चलता कि 'मेरी क्या भूल हो रही है? कहाँ भूल हो रही है?!' पूरा का पूरा ही भूल का ही तंत्र है न! उसी वजह से तो खुद की सत्ता आवृत पड़ी हुई है। आत्मा तो दिया है लेकिन सत्ता पूरी ही आवृत पड़ी हुई है! यह 'वर्ल्ड' (जगत्) ही अपनी मालिकी का है, लेकिन सत्ता प्राप्त नहीं होती। वह तो जितना-जितना शुद्ध होता जाता है, उतनी-उतनी सत्ता प्राप्त होती जाती है।

इस दुनिया में जितनी स्वच्छता आपकी, उतनी दुनिया आपकी! आप मालिक हो इस दुनिया के! मैं इस देह का मालिक छब्बीस सालों से नहीं हुआ, इसलिए हमारी स्वच्छता संपूर्ण है! अत: स्वच्छ हो जाओ, स्वच्छ!

प्रश्नकर्ता : स्वच्छता के बारे में खुलासा कीजिए।

दादाश्री : स्वच्छता अर्थात् इस दुनिया की किसी भी चीज़ की जिसे ज़रूरत नहीं है, भिखारीपन ही नहीं है!

भगवान के प्रतिनिधि कब कहे जाते हैं? जब ज्ञान शुद्ध रहता है। मान की भीख न बढ़े। कीर्ति की भीख न हो। कोई अपमान करे तो आशीर्वाद दें तब भगवान उन्हें खुद का प्रतिनिधित्वपन देते हैं। खुद की सत्ता उन्हें देते हैं। ऐसी सत्ता हमारे हाथ में हैं। कैसी सत्ता? संपूर्ण सत्ताधीश! क्योंकि हमें किसी भी प्रकार की भीख नहीं रही और भीख होगी तो क्या होगा? वह उसी में रचापचा रहेगा और अंत में भीख ही निकाल देनी है न! भीख माँगने से काम नहीं चलेगा। प्योर बनो, प्योर!

मोक्ष में जाना है तो सबकुछ साफ करना पड़ेगा। बिल्कुल प्योर! ये दादा हज़ारों लोगों को निरंतर याद रहते हैं, चौबीसों घंटे याद रहते हैं, तब कितने प्योर हुए हैं! जितने प्योर उतने अपने आप ही याद रहते हैं, याद नहीं करने पड़ते। प्योर होने की ज़रूरत है। ऐसे प्योर ज्ञानी पुरुष की भेंट हो जाए तो मुक्ति!

जय सच्चिदानंद

विभिन्न सत्संग केन्द्रों में आयोजित गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम

सेन्टर		समय	कार्यक्रम का पता	संपर्क
अंजड़	**(2 अगस्त)**	सुबह 9 से 2	अन्नपूर्णा भवन, पाटीदार समाज बायपास रोड.	9617153253
अंब (उना)	**(29 जुलाई)**	सुबह 10 से 1-30	श्री हनुमान मंदिर, रामलीला मैदान, गुरु रविदास मंदिर के पास.	8146270998
अकोला	**(29 जुलाई)**	दोपहर 2-30 से 7	स्थल की जानकारी के लिए संपर्क करें.	9511211451
अजमेर	**(26 जुलाई)**	सुबह 9-30 से 1	स्थल की जानकारी के लिए संपर्क करें.	9460611890
अमरावती	**(1 अगस्त)**	शाम 4 से 8-30	रूद्रेश मंगलम, नंदा मोटर्स के सामने, नवाथे चौक, बडनेरा रोड.	9403411471
अमृतसर	**(2 अगस्त)**	दोपहर 3 से 6-30	76, गली नंबर 2, गोकुल नगर, मजीठा रोड (गोपाल मंदिर के पास).	9569569971
आग्रा	**(29 जुलाई)**	शाम 6 से 9-30	यूथ हॉस्टल, महात्मा गाँधी मार्ग, संजय प्लेस.	9219732860
आसनसोल	**(29 जुलाई)**	दोपहर 3-30 से 7	नंदी नियर बोरतोला हरिमंदिर, नंदी रोड, जमुरिया.	7679186469
इंदौर	**(26 जुलाई)**	सुबह 10 से 4	श्री गुजरात समाज, 1, नसिया रोड, सरवटे बस स्टेंड.	9644544455
उज्जैन	**(26 जुलाई)**	सुबह 9-30 से 1	श्री अभ्युदयपुरम् जैन तीर्थ, बड़नगर रोड़.	9826487407
उदयपुर	**(29 जुलाई)**	दोपहर 2 से 5-30	1462 छोटी नोखा, कुम्हारों का भट्टा के अंदर.	9414538411
कानपूर	**(2 अगस्त)**	सुबह 10-30 से 4	124/172, सी ब्लोक, गोविंदनगर, दीप होटल के पास.	9452525981
काशीपुर	**(26 जुलाई)**	सुबह 9 से 12-30	जगदम्बा विहार कॉलोनी, पशु चिकित्सालय के पास, द्रोणसागर रोड.	9457635398
हरियाणा	**(2 अगस्त)**	सुबह 10 से 2	पंजाबी भवन, 50 फीट रोड, कुरुक्षेत्र.	9896871690
कोलकाता	**(19 जुलाई)**	सुबह 9-30 से 5	श्रीमद् राजचंद्र आत्म तत्व रिसर्च सेंटर, 19/2A - श्यामानंद रोड, बेलतला गर्ल्स स्कूल के पास.	9830080820
कोल्हापुर सांगली	**(29 जुलाई)**	सुबह 10 से 4	महालक्ष्मी हॉल साईक्स एक्स्टेंशन, महागांवकर मार्ग, स्वयंसिध्दा शेजारी, शाहुपुरी.	7499898426, 9403787776
खरगोन	**(2 अगस्त)**	दोपहर 2 से 4	23, हनी होम, संत कृपा नगर, खंडवा रोड, खरगोन.	9753141714
गोरखपुर	**(29 जुलाई)**	सुबह 11 से 3	103 E, रामनगर कोलोनी, गोरखनाथ.	9935949099
ग्वालियर	**(29 जुलाई)**	दोपहर 3 से 7	K.S. मेमोरियल हाईस्कूल, गायत्री विहार कॉलोनी, पिंटू पार्क.	9926265406
चंडीगढ़	**(26 जुलाई)**	सुबह 10 से 1-30	गढ़वाल भवन, साईबाबा मंदिर के पास, सेक्टर 29A.	9780732237
चित्तौड़गढ़	**(2 अगस्त)**	दोपहर 1 से 4-45	आईटेक, आई टी आई, 69-70 बालाजी नगर सेगवा हाउसिंग बोर्ड, सेंथी.	9829749481
चेन्नई	**(21 जुलाई)**	दोपहर 2-30 से 6	होटल सुधा इन, 111, पूनमल्ली हाई रोड, पहली मंजिल, एग्मोर, चेन्नई - 600008	7200740000
छत्रपति संभाजीनगर	**(29 जुलाई)**	शाम 5 से 9	निमिषा बँगला, पेंडकर हॉस्पिटल के सामने, जुबली पार्क चौक, सेंट्रल बस स्टैंड रोड.	8982543355
जबलपुर	**(29 जुलाई)**	दोपहर 2-30 से 7	यूथ हॉस्टल, रानीताल स्टेडियम के पास, रानीताल चौक.	9425411965
जमशेदपुर	**(29 जुलाई)**	दोपहर 3 से 3-60	प्रेम नगर, रोड नं 1, पंचवटी शिव मंदिर के पास, पो - टेल्को.	9031292567
जयपुर	**(26 जुलाई)**	सुबह 10 से 5	पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर.	8290333699
जालंधर	**(29 जुलाई)**	सुबह 9 से 2	C/O ईगल प्रकाशन, सेन्ट्रल मिल कंपाउंड, पुराना रेल्वे रोड.	9814063043
जलगाँव	**(2 अगस्त)**	शाम 4 से 7-30	झुलेलाल हॉल, R.R. विद्यालय के सामने, गुरुद्वारा के पास.	9420942944
जोधपुर	**(26 जुलाई)**	दोपहर 2-30 से 6-30	नागरिक मण्डल भवन, नेहरू पार्क.	9828360301
झाँसी	**(29 जुलाई)**	दोपहर 12 से 4	A/82 दीनदयाल नगर, भारत माता मंदिर के पास.	9415588788
दमोह	**(26 जुलाई)**	दोपहर 1 से 4-30	कन्या विद्यालय, वार्ड नं 5, पथरिया.	9926985853
दर्यापुर	**(2 अगस्त)**	शाम 4 से 7-30	दादा भगवान सत्संग सेन्टर, बनोसा अकोट रोड.	7218133513
दिल्ली और गाज़ियाबाद	**(2 अगस्त)**	सुबह 10 से 2	शाह ऑडिटोरियम - 2, राज निवास मार्ग, सिविल लाइंस.	9810098564
देहरादून	**(2 अगस्त)**	सुबह 11 से 4	1, अंतरिप विहार, C-12, भारतीय स्टेट बैंक के पास, क्लेमेन टाउन, टर्नर रोड.	9012279556

धर्मशाला	**(29 जुलाई)**	सुबह 10 से 2	टिक्का लेहसर, वेद मंदिर के पास, योल कैंट.	9805254559
धुले	**(2 अगस्त)**	शाम 5 से 8-30	साहेब निवास, प्लॉट नं 24, राजवाडे नगर (राधाकृष्ण नगर), चालीसगांव रोड.	9404970668, 9834433701
नवादा	**(29 जुलाई)**	दोपहर 12 से 4	दुर्गा स्थान के पास, बिजली ऑफिस के सामने, गया रोड.	9128949491
नांदेड़	**(29 जुलाई)**	दोपहर 12 से 3-30	घर नं-16, महावीर सोसाइटी, नारायणी हॉस्पिटल रोड, शिवाजी नगर.	9960043888
नागपुर	**(30 जुलाई)**	दोपहर 3-30 से 8	कच्छी व्हिसा ओसवाल भवन, लक्कड़गंज.	9403399377
नाशिक	**(2 अगस्त)**	दोपहर 3 से 7	आर.पी. विद्यालय, निमाणी बस स्टैंड के पास, पंचवटी.	9822683945
पटना	**(2 अगस्त)**	सुबह 10 से 5	महाराणा प्रताप भवन, आर्य कुमार रोड, दिनकर गोलंबर के पास.	7352723132
पाली	**(29 जुलाई)**	शाम 4 से 7-30	317, रजत विहार, कोलोनी, नयागांव रोड.	9252065202
पुणे त्रिमंदिर	**(26 जुलाई)**	सुबह 8 से 5	पुणे-सातारा रोड, वर्वे बुद्रुक, पुणे - 412205	7875740566
पूर्णियाँ	**(29 जुलाई)**	सुबह 11 से 4	शांति नगर, मंझली चौक, मधुबनी.	7488744604
प्रयागराज	**(26 जुलाई)**	सुबह 11 से 3	मणिबेन पुस्तकालय, अखिल भारतीय सरदार पटेल सेवा संस्थान, अलोपीबाग.	8840106094
फोंडा(गोवा)	**(1 अगस्त)**	दोपहर 3 से 6-30	होटल यशोदा डीलक्स, पुराने बस स्टेंड के पास.	8698745655
बक्सा	**(29 जुलाई)**	दोपहर 3-30 से 7	चन्तापरा गाँव, पोस्ट - थामना, जिला-बक्सा.	6002103839
बरगढ़	**(29 जुलाई)**	दोपहर 3 से 7	''नित्यम'', गोरु मार्केट रोड, मास्टर टिकरा.	9776803144, 8249424813
बाड़मेर	**(29 जुलाई)**	दोपहर 3-30 से 7	दिगंबर जैन मंदिर, मॉल गोदाम रोड.	9194084249
बिलासपुर	**(29 जुलाई)**	दोपहर 4-30 से 8	B-39, गुप्ता गली, मन्नू चोक, टिकरापारा.	9425530470
बुटवल (नेपाल)	**(29 जुलाई)**	दोपहर 12 से 5	दुर्गा मंदिर होल, गोल पार्क, बुटवल.	9847016764
बेंगलुरु	**(26 जुलाई)**	सुबह 10-30 से 4	महाराष्ट्र मंडल, 2nd क्रॉस, गांधीनगर.	9590979099
भिलाई	**(29 जुलाई)**	शाम 4 से 7-30	'दादा दर्शन', मैत्रीगार्डन चौक, पानी की टंकी के पास, मरोदा.	9407982704
भुवनेश्वर और कटक	**(2 अगस्त)**	सुबह 10 से 4	स्थल की जानकारी के लिए संपर्क करें.	9777570515
भोपाल	**(2 अगस्त)**	सुबह 10 से 5	नर्मदीय भवन, जवाहर बाल भवन के पीछे, तुलसी नगर.	9425836251
मुंबई	**(29 जुलाई)**	शाम 4 से 8	मुंबई त्रिमंदिर, ऋषिवन, अभिनव नगर रोड, काजुपाड़ा, बोरीवली-ई.	9323528901
मंगलूरु	**(27 जुलाई)**	दोपहर 2-30 से 6	मातृछाया हॉल, श्री गुजराती इंग्लिश मीडियम हाईस्कूल, भोज राव लेन, अलके.	9342453211
मालदा	**(26 जुलाई)**	सुबह 10 से 5	सुकांता पाली, पोस्ट - रतुआ, जिला - मालदा.	7908922840
मुजफ्फरपुर	**(29 जुलाई)**	दोपहर 12 से 3-30	खाबरा, मुजफ्फरपुर.	9939853447
मेदिनीनगर (डालटनगंज)	**(2 अगस्त)**	शाम 4 से 7-30	कुम्हार मोहल्ला, बैंक ऑफ़ इंडिया के पास में.	6200738415
रांची	**(2 अगस्त)**	दोपहर 3-30 से 7	305, तीसरी मंजिल, पर्ल स्कायर, बरलाल स्ट्रीट, रांची एक्सप्रेस के पास, अपर बाजार.	9304077199
रायपुर	**(26 जुलाई)**	सुबह 10 से 4	दादा दर्शन, गुजराती लुहार समाज भवन, अशोक विहार कॉलोनी के पास, रिंग रोड 2, गोंदवारा.	9179025061
लखनऊ	**(26 जुलाई)**	दोपहर 2 से 6	यूथ हॉस्टल, आनन्द नगर, बरहा रोड, आलमबाग, लखनऊ.	8885825819
लुधियाना	**(29 जुलाई)**	दोपहर 3 से 6-30	170 F - किचलू नगर, लुधियाना.	9465051163
वाराणसी	**(26 जुलाई)**	सुबह 10 से 2	श्री श्रृंगेरी शंकराचार्य मठ, लक्ष्मी सिनेमा के पास, महमूरगंज.	9795228541
सतारा	**(26 जुलाई)**	दोपहर 1 से 5	929, आदर्श अपार्टमेंट, भावे सुपारी के पास, शनिवार पेठ.	9921910738
सूरजपुर	**(26 जुलाई)**	दोपहर 12 से 3-30	ग्राम- ऊंचडीह, पोस्ट- बसदई, सूरजपुर.	9165606166
सोलापुर	**(26 जुलाई)**	दोपहर 12 से 6	B-41 ऐशानी बंगलो, निखिल थोबडे नगर, वसंत विहार, साई सुपर मार्केट के पीछे.	9284188494
हरिद्वार	**(2 अगस्त)**	दोपहर 2 से 5-30	105 ET हॉस्टल, सेक्टर 2, शिव मंदिर के पास, HRDC के सामने, भेल.	9411951073
हल्द्वानी	**(2 अगस्त)**	सुबह 8-30 से 12	जगन्नाथपुरम फेज़ - 1, हरिनगर, पोस्ट - हरिपुर नायक, कुसुमखेडा.	9412084002
हुबली	**(19 जुलाई)**	दोपहर 3-30 से 7	श्री पाटीदार भवन, उणकल टिम्बर यार्ड, विद्यानगर.	9513216111
हैदराबाद	**(26 जुलाई)**	सुबह 10 से 1-30	कच्छी भवन, स्ट्रीट नं 4, राम कोटी, इडन बाग.	9849167229, 9885058771

Atmagnani Pujyashree Deepakbhai's USA - Canada Schedule - 2026

USA & Canada: +1-877-505-DADA (3232) Email - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	From	To	Event	Venue
23-Jul	Thu	6:00 PM	7:30 PM	**Satsang**	**(Atlanta, GA)** Shakti Mandir 1450 Huie Road Lake City, GA 30260
24-Jul	Fri	11:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	
24-Jul	Fri	5:30 PM	9:00 PM	**Gnanvidhi**	
28-Jul	Tue	10:30 AM	12:30 PM	**Satsang**	**Gurupurnima (Jacksonville, FL)** Hyatt Regency Jacksonville Riverfront 225 E Coastline Dr Jacksonville, FL 32202
28-Jul	Tue	5:00 PM	7:00 PM	**Satsang**	
29-Jul	Wed	8:00 AM	9:30 AM	**Guru Pujan, Aarti, GP message**	
29-Jul	Wed	10:00 AM	12:30 PM	**Gurupurnima Darshan**	
29-Jul	Wed	4:30 PM	7:00 PM	**Gurupurnima Darshan**	
29-Jul	Wed	9:00 PM	10:00 PM	**Live Bhakti**	
30-Jul	Thu	10:30 AM	12:00 PM	**Aptaputra Satsang**	
30-Jul	Thu	5:00 PM	7:00 PM	**Satsang**	
31-Jul	Fri	10:00 AM	12:30 PM	**Pran Pratishtha of Small Idols of Simandhar Swami**	
31-Jul	Fri	5:00 PM	7:00 PM	**Satsang**	
1-Aug	Sat	10:00 AM	12:30 PM	**Satsang**	
1-Aug	Sat	4:30 PM	7:30 PM	**Gnanvidhi**	
2-Aug	Sun	10:30 AM	12:00 PM	**Satsang**	
6-Aug	Thu	7:00 PM	9:00 PM	**Satsang**	**(Dallas, Texas)** Four Points by Sheraton Dallas Fort Worth Airport North 1580 Point W Blvd Coppell, TX 75019
7-Aug	Fri	10:30 AM	12:00 PM	**Aptaputra Satsang**	
7-Aug	Fri	6:30 PM	10:00 PM	**Gnanvidhi**	

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

अडालज

23 अगस्त (रवि) शाम 4-30 से 8 - **ज्ञानविधि**

4 सितम्बर (शुक्र) रात 9-30 से 12-15 - **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम**

5-6 सितम्बर (शनि-रवि) - **पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम** (गुरुपूर्णिमा के दर्शन)

8 से 15 सितम्बर (मंगल से मंगल) - **आप्तवाणी 14 भाग-5 पर सत्संग पारायण**

वाराणसी

29-31 अगस्त (शनि-सोम) शाम 6 से 8-30 - **सत्संग** और **30 अगस्त** (रवि) शाम 4-30 से 8 - **ज्ञानविधि**

स्थल : रुद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर, नगर निगम के पास, सिगरा, वाराणसी. **संपर्क :** 7007270283

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687, **भावनगर :** 9313882288, **अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

मांडवी : आप्तसंकुल भाईयों की रिट्रीट : ता. 10-11 जून 2026

मांडवी : आप्तसंकुल बहनों की रिट्रीट : ता. 12-13 जून 2026

भुज : ज्ञानविधि : ता. 14 जून 2026

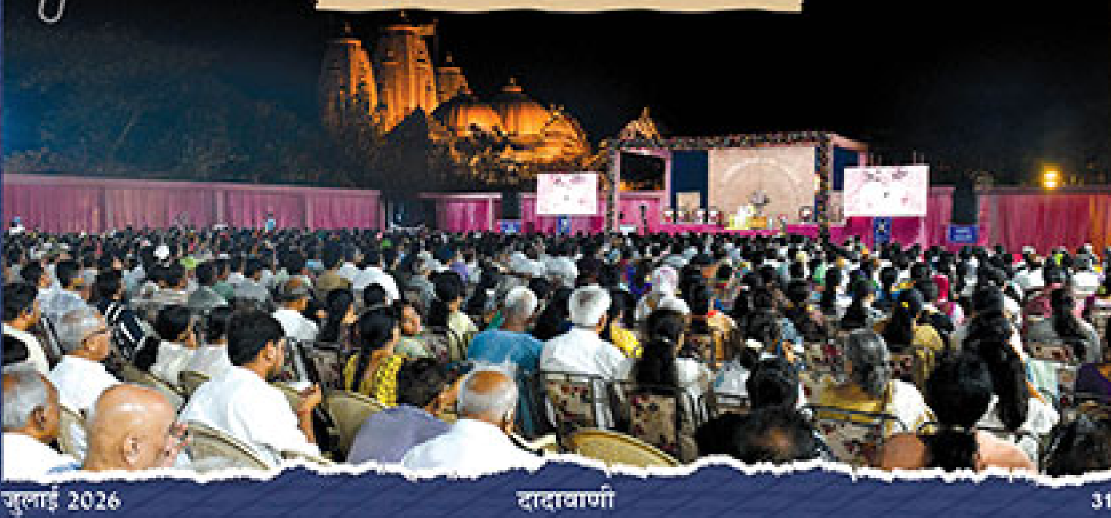

जुलाई 2026
वर्ष-21 अंक-9
अखंड क्रमांक - 249

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

'ज्ञानी पुरुष' कैसे होते हैं ?

श्रीमद् राजचंद्र ने क्या कहा है, 'ज्ञानी पुरुष' कौन है ? जिन्हें किंचित्‌मात्र किसी भी प्रकार की स्पृहा नहीं है, जिन्हें दुनिया में किसी प्रकार की भीख नहीं है, जिन्हें उपदेश देने की भी भीख नहीं है या शिष्यों की भी भीख नहीं है, किसी को सुधारने की भी भीख नहीं है, किसी भी प्रकार का गर्व नहीं है, *गारवता* नहीं है, *पोतापणुं* नहीं है, वे। इस *पोतापणा* में सबकुछ आता जाता है। ये 'अंबालाल मूलजीभाई पटेल' हैं न, उन्होंने खुद का *आपापणुं* (अपनापन) छोड़कर भगवान को ही समर्पित कर दिया है, तो भगवान उनका सबकुछ संभाल लेते हैं। यह *पोतापणुं* है तब तक ही भेद है और तब तक ही भगवान दूर हैं। *पोतापणुं* छोड़ दिया तो भगवान आपके पास ही हैं। *पोतापणुं* छोड़ दिया तो आपका सबकुछ भगवान ही चला लेंगे।

- दादाश्री

DBF • Adalaj

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapodiya New High School, Chhatral - Pratappura Road, At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.